सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक 9 • 5 दिसम्बर 2019• मूल्य : 20 रु.

प्रभावक आचार्य भगवंत श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की
70वीं पुण्यतिथि (दि. 19 दिसंबर 2019) पर भावभरी वंदना... भावांजलि...

|| श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः || || श्री गौडी पार्श्वनाथाय नमः || || श्री महावीरस्वामिने नमः ||

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

|| दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ||

|| पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकान्तिसागरसूरि गुरुभ्यो नमः ||

श्री बाड़मेर नगरे

नवनिर्मित श्री गौडी पार्श्वनाथ प्रभु

के जिनालय की

भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

एवं

कुमारी पूजा संकलेचा की भागवती दीक्षा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को भावभरा आमंत्रण

पावन निश्रा
प.पू. गुरुदेव
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभ
सूरीश्वरजी म.सा.

❁ भव्य वरघोड़ा ❁

ता. 25 फरवरी 2020

❁ प्रतिष्ठा शुभ दिवस ❁

वि. सं. 2076 फाल्गुन सुदि 3
बुधवार ता. 26 फरवरी 2020

❁ निवेदक ❁

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छीय हाला जैन संघ

ब्यावर, फालना, बाड़मेर, जयपुर, बेंगलोर, मुंबई

❁ महोत्सव स्थल ❁

श्री गौडी पार्श्वनाथ जिनालय

गडरा रोड़, पो. बाड़मेर (राज.)

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा, पकामदुक्खा अनिकाम सोक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया, खाणी अणत्थाण उ कामभोगा।।

कामभोग क्षण मात्र सुख और चिरकाल दु:ख देने वाले है, बहुत दु:ख कम सुख देने वाले है, कामभोग संसारमुक्ति के शत्रु है और अनर्थों की खान है।

Sensuous pleasures give temporary happiness but bring unhappiness for a long time; they give more unhappiness than happiness. They are great hindrances to emancipation and they are really a mine of misfortunes.

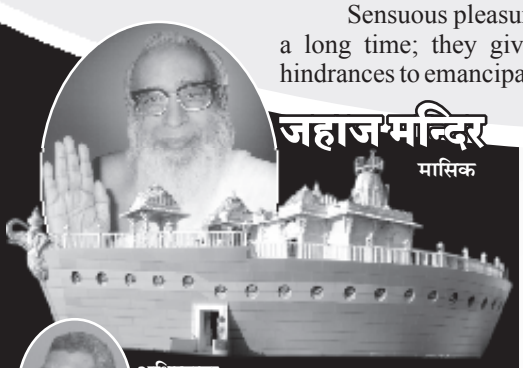

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 9 5 दिसम्बर 2019 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	गोल्लपुड़ी	05
3. प्रभावक आचार्य देव श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.	आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.	06
4. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	11
5. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	13
6. खरतरगच्छ की महान् विभूति दानवीर सेठ मोतीशाह	चांदमल सिपाणी	15
7. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	17
8. अभिनन्दन मेरे मार्गदर्शक गुरुदेव का	ॲड. गजेन्द्र देवीचंद भंसाली	20
9. श्वास कला यानि स्वर विज्ञान	प्रस्तुति : गौतम संकलेचा	21
10. समाचार दर्शन	संकलित	25
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

विशिष्ट दिन

- दि. 07 दिसंबर मौन एकादशी, 150 कल्याणक दिवस
- दि. 11 दिसंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण, रोहिणी
- दि.19 दिसंबर आ. श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा. पुण्यतिथि, मेड़ता रोड फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ
- दि. 21 दिसंबर श्री पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक
- दि. 22 दिसंबर श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक
- दि. 25 दिसंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण, पू. उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी की 203वीं पुण्यतिथि

नवप्रभात

प्रश्न है– जीवन में माधुर्य क्यों नहीं है?

इस प्रश्न के उत्तर में वीणा याद आती है। वीणा बहुत मधुर बोलती है। पर तभी, जब उसके तार व्यवस्थित हों।

यदि तार ढ़ीले होंगे, तो माधुर्य नहीं बरस पायेगा। यदि ज्यादा तने हुए होंगे तो तार ही टूट जायेंगे।

जीवन के संदर्भ में भी यही सिद्धान्त लागू होता है। चिंतन करें कि जीवन जीया तो जा रहा है, पर उसका संगीत कहीं खो गया है। देखना है कि जीवन रूप वीणा के तारों की क्या दशा है?

इस वीणा के तीन तार हैं।

1. मस्तिष्क 2. हृदय 3. नाभि।

मनुष्य की वीणा के ये तीन केन्द्र हैं। यदि ये तीनों तार एक सुर में बजे तो दिव्य संगीत के आनंद का अनुभव होता है। तीनों का सूक्ष्म अवलोकन करना है।

सबसे पहले मस्तिष्क का हाल देखें। वह तार बहुत ज्यादा तना हुआ रहता है। सबसे ज्यादा इसी तार का उपयोग है। इस लिये वह तन गया है। हमारी शिक्षा भी तर्क का ही विकास करती है। दूसरे केन्द्रों की ओर ध्यान ही नहीं है।

दूसरा केन्द्र हृदय है। उसके तार एकदम ढ़ीले हो गये हैं। इस कारण हृदय का संगीत तो जीवन में गूंजता ही नहीं है।

क्रोध मस्तिष्क से पैदा होता है। प्रेम हृदय से जन्म लेता है। हमारे जीवन में क्रोध, नफरत, घृणा, वाद विवाद की अधिकता है। प्रेम अल्प है। जितना है, वह भी संदेह से भरा!

तीसरे नाभि केन्द्र का तो अभी तक परिचय ही नहीं हुआ है। नाभि केन्द्र में ही हमारे अस्तित्व का राज है। उसके तारों को व्यवस्थित करना, जीवन को सार्थक करना है।

मस्तिष्क से प्रारंभ हुई यात्रा को हृदय से होकर नाभि केन्द्र तक पहुँचाना है।
इन तीनों केन्द्रों की जागृति में ही जीवन का संगीत छिपा है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 3

गोल्लपुड़ी

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

हैदराबाद जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग क्रमांक नौ पर नगर से 6 किमोमीटर दूर गोल्लपुड़ी गाँव है। कृष्णा जिले के अन्तर्गत वर्तमान में यह गाँव विजयवाड़ा ग्रामीण मंडल में है। परन्तु विकास की गति को देखते हुये इसे विजयवाड़ा के उपनगर की संज्ञा दी जा सकती है। लगभग 10 वर्ष पूर्व 11 एकड़ भूमि में जैन कॉलोनी का सपना संजोये मित्रों ने माघ सुद 12 शुक्रवार दि. 14.2.2003 को भूमि पूजन एवं संवत् 2059 फागण सुद 2 बुधवार दि. 5.3.2003 शिलान्यास कर गृह निर्माण से पूर्व मंदिर निर्माण का निश्चय किया।

राष्ट्रीय राजमार्ग से विजयवाड़ा नगर में जाने वाले पुराने रास्ते या यूं कहें बाईपास मार्ग पर मुख्य सड़क से आधा कि.मी. अन्दर सोलंकी जैन कॉलोनी है। राजस्थान के जैन बंधुओं ने यहाँ भूखण्ड ले रखे हैं। इन्हीं भूखण्डों के मध्य धवल चमकते मकराना पाषाण से शिखरबद्ध मंदिर निर्मित हुआ है।

इस जिनालय में सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ, आदिनाथ प्रभु एवं महावीर प्रभु प्रतिष्ठित किये गये हैं।

जिनालय के दायें मंदिर स्वरूप में ही स्वतन्त्र दादावाड़ी है, जिसमें दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरीश्वर जी की परिकर एवं कमलनुमा गादी सहित 25 इंच ऊँची व 19 इंच चौड़ी प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी है।

नाकोड़ा भैरू, मणिभद्रजी, चक्रेश्वरी देवी, अंबिका देवी आदि भी प्रतिष्ठित हैं। इस मंदिर की प्रतिष्ठा 3 फरवरी, 2006 को संपन्न हुई है।

इस उपनगरीय कॉलोनी में दादावाड़ी निर्माण का सपना श्री शिवराज जी होगजी सोलंकी ने संजोया था।

आंध्र प्रदेश पर्यटन विकास निगम द्वारा निर्मित नदी किनारे विशाल मनोरंजन पार्क, कृष्णा वेणी मोटल यहाँ से 5 कि.मी. की दूरी पर है।

यहाँ से 20-25 कि.मी. की दूरी पर ह्रींकार जैन तीर्थ है।

पता : श्री पार्श्वनाथ जिनालय एवं जिनदत्तसूरि दादावाड़ी,
सोलंकी जैन कॉलोनी - मेलराय सेन्टर, गोल्लपुड़ी - 521 225
तालुका - विजयवाड़ा (ग्रामीण) जिला - कृष्णा (आंध्र प्रदेश)
दूरभाष - 094152 41532

गुरु स्मृति

प्रभावक आचार्य देव श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा.

—आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.

आचार्य पद की महत्ता

जैन शासन में आचार्यों का स्थान श्री तीर्थंकर भगवान् से दूसरे नम्बर पर ही आता है क्योंकि जिस समय भव्यात्माओं को मोक्ष-मार्ग दिखा कर श्री तीर्थंकर भगवान् अजरामर पद को प्राप्त हो जाते हैं, उस समय उनके विरहकाल में द्वादशाङ्गी रूप सम्पूर्ण प्रवचन को और जैन-संघ के विशिष्ट उत्तरदायित्व को आचार्य देव ही धारण करते हैं। अतएव प्रवचन-प्रभावक प्रातःस्मरणीय आचार्य-देवों के पुनीत चरित्रों को जानना प्रत्येक आत्महितैषी का कर्तव्य हो जाता है। अतः एक ऐसे ही आचार्यदेव के दिव्य जीवन से परिचय कराया जाता है। जिसकी अतुल-कीर्त्ति-किरणों से मारवाड का प्रत्येक प्रदेश आज प्रकाशमान है।

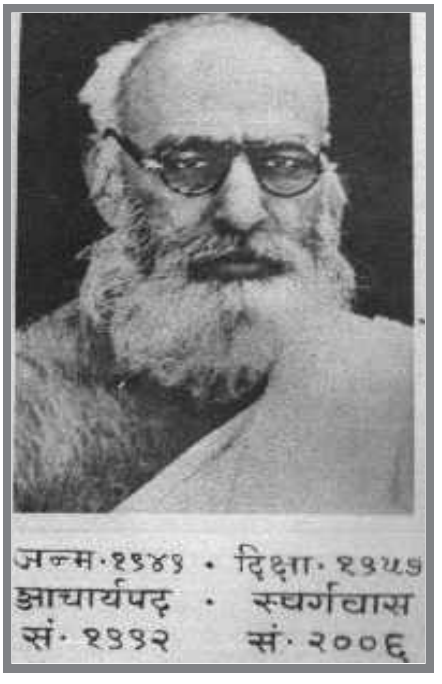

पूर्व सम्बन्ध

श्रीमन्महावीर भगवान के ६७वें पट्टधर श्रीजिनभक्तिसूरिजी म० के पट्टशिष्य श्री प्रीतिसागरजी महाराज ने विक्रम की १९वीं शताब्दी में यति समुदाय में बढ़ते हुए शिथिलाचार को और प्रभुपूजा विरोधी ढुंढक मत के प्रचार को देखकर वाचनाचार्य श्री अमृतधर्मजी म. और महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी महाराज-जो कि आपके शिष्य-प्रशिष्य थे- के साथ श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज पर क्रियोद्धार किया था। महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म० की शिष्य परम्परा में परमोपकारी सिद्धान्तोदधि गणाधीश्वर श्री सुखसागरजी महाराज हुए। आपका समुदाय खरतरगच्छीय साधुओं में अधिक प्राचीन एवं सुविस्तृत रूप से वर्तमान है।

श्री सुखसागरजी महाराज के समुदाय के अधिनायक आबाल-ब्रह्मचारी प्रवचन-प्रभावक पूज्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज थे। आपका ही पुनीत चरित्र प्रस्तुत लेख में प्रकाशित किया जाता है।

कुमार हरिसिंह

जोधपुर राज्य के नागोर परगने में प्राकृतिक सौन्दर्य से हराभरा 'रोहिणा' नाम का एक छोटा सा गांव है। वहां खेती-पशुपालन आदि स्वावलम्बी कर्म वाले और युद्धभूमि में दुश्मनों से लोहा लेने वाले, क्षत्रियोचित गुणों से स्वतन्त्र जीवन वाले, जाट वंशीय झुरिया खानदान के लोगों की जमींदारी है। जमींदारों के प्रधान पुरुष श्री हनुमन्तसिंहजी की धर्मपत्नी श्रीमती केसरदेवी की पवित्र कुँख से वि० सं० १९४९ के मार्गशीर्ष शुक्ला ७ के दिन दिव्य मुहूर्त में आपश्री का जन्म हुआ था। हरि=सूर्य और सिंह के समान तेजोमय भव्य आकृति और महापुरुषों के प्रधान लक्षणों से युक्त अपने सुकुमार को देखकर माता-पिता ने आपका गुणानुरूप नाम 'श्री हरिसिंह' रखा था।

सफल संयोग

अपनी अलौकिक लीलाओं से माता-पितादि परिजनों को आनन्दित करते हुए कुमार हरिसिंह जब करीब ६-७ वर्ष के हुए तब अपने पिता के साथ पूज्य गणाधीश्वर श्री भगवानसागरजी महाराज-जो कि गृहस्थावस्था में आपके चाचा लगते थे- के दर्शन के लिये फलोदी (मारवाड़) गये। बाल लीला के साथ आपने वंदन करके श्री गुरु महाराज की पापहारिणी चरणधूलि को अपने मस्तक में लगाई। श्री गुरुदेव ने दिव्य-दृष्टि से आप में भावी प्रभावकता के प्रशस्त चिह्न पाये। लोक-कल्याण की भावना से प्रेरित हो गुरु-महाराज ने श्री हनुमन्तसिंहजी को उपदेश दिया कि तुम्हारे ५ लड़के हैं। उनमें से इस मध्यम कुमार को आप हमें दे दो। क्योंकि यह कुमार बड़ा भारी साधु होगा और अपने उपदेशों से जैनशासन की महती सेवा करेगा। इसको देने से तुमको भी अपूर्व धर्म-लाभ होगा। गुरु महाराज की इस पुण्य प्रेरणा से प्रेरित हो वीरहृदयी हनुमन्तसिंहजी ने बड़ी वीरता के साथ अपने प्राण प्यारे पुत्र को धर्म के नाम पर श्री गुरु महाराज को भेंट कर दिया। गुरुदेव और कुमार के इस सफल संयोग से 'सोने में सुगन्ध' की कहावत चरितार्थ हुई। धन्य गुरु! धन्य पिता!! धन्य कुमार!!!

साधुता के अंकुर

श्री गुरु महाराज ने अपनी वृद्धावस्था के कारण कुमार की विशेष देखभाल और पठन-पाठन का भार अपने सहयोगी महातपस्वी श्री छगनसागरजी महाराज को दिया। पूज्य तपस्वीजी के योग्य अनुशासन में महामहिमशालिनी मेधा वाले कुमार ने साधु क्रिया के आचार थोड़े ही समय में सीख लिये। पूर्व जन्म के पुण्योदय की प्रबलता से आठ वर्ष की बाल्य अवस्था में गुरु महाराज की परम दया से साधुता के बीज अंकुरित हो गये।

मुनि श्री हरिसागरजी म.

कुमार हरिसिंह जब कुछ अधिक साढ़े आठ वर्ष के हुए तब युवक सा जोश और वृद्ध सा अनुभव रखते थे। गुरु महाराज ने माता-पिता की और स्थानीय (फलोदी) जैन संघ की अनुमति से आपकी दीक्षा का प्रशस्त मुहुर्त वि.सं. १९५७ आषाढ़ कृष्ण ५ के दिन निर्धारित किया। अपने आयुष्य की अवधि निकट आ जाने से श्री गुरु महाराज ने श्री संघ से खमत-खामणा करते हुए अन्तिम आज्ञा दी कि 'हरिसिंह को योग्य अवस्था होने पर इसे मेरा उत्तराधिकारी मानना'। संघ के मुखिया महातपस्वी श्री छगनसागरजी म० ने अपने पूज्य गणाधीश्वरजी की इस आज्ञा को शिरोधार्य करके उनको निश्चिन्त बना दिया। गणि श्री भगवानसागरजी महाराज आत्मरमण करते हुए दिव्य लोक को सिधार गये तब संघ में एकदम शोक छा गया। परंतु गुरुदेव के प्रतिनिधि स्वरूप कुमार हरिसिंह के दीक्षा-महोत्सव ने शोक को मिटा कर अपूर्व आनन्द को फैला दिया। श्री संघ के सामने बड़े भारी समारोह के साथ पूज्य महातपस्वी श्री छगनसागरजी महाराज ने कुमार हरिसिंह को उसी पूर्व निश्चित सुमुहुर्त में भगवती दीक्षा प्रदान कर पूज्य गणाधीश्वर श्री भगवानसागरजी महाराज के शिष्य 'मुनि श्री हरिसागरजी' नाम से उद्घोषित किया।

गुरु भाई

गणाधीश्वर पूज्य श्री भगवानसागरजी महाराज साहब के शिष्य अध्यात्म योगी चैतन्यसागरजी म. उर्फ चिदानन्दजी महाराज, महोपाध्याय श्री सुमतिसागरजी महाराज, मुनि श्री धनसागरजी महाराज, मुनि श्री तेजसागरजी महाराज, श्री त्रैलोक्यसागरजी महाराज और आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज हुए।

आदर्श जीवन

पूज्य श्री छगनसागरजी महाराज की वृद्धावस्था होने से और मुनि श्री हरिसागरजी म. की बाल अवस्था होने से सं० १९५७ से १९६५ तक के चातुर्मास लोहावट और फलोदी (मारवाड़) में ही हुए। इस सानुकूल संयोग में ज्ञान-तप और अवस्था से स्थविर पद को पाये हुए पूज्य श्री छगनसागरजी महाराज ने आपको संस्कृत व प्राकृत भाषा को पढ़ाने के साथ-साथ प्रकरणों का तत्त्व-ज्ञान और आगमों का मौलिक

रहस्य भली प्रकार से समझा दिया। विद्यागुरु की परम दया और आपकी प्रौढ़ प्रज्ञा ने आपके व्यक्तित्व को आदर्श और उन्नत बना दिया।

गणाधीश श्री भगवानसागरजी महाराज की अन्तिम आज्ञानुसार मुनि श्री हरिसागरजी म. को महातपस्वी श्री छगनसागरजी महाराज ने सं० १९६६ द्वितीय श्रावण शुक्ला ५ को अपने ५२ वें उपवास की महातपश्चर्या के पुनीत दिन में जोधपुर, फलोदी, तीवरी, जैतारण, पाली आदि अन्यान्य नगरों के उपस्थित जैन संघ के सामने महासमारोह के साथ लोहावट में गणाधीश पद से अलंकृत किया। आपके गणाधीश पद के समय उपस्थित साधुओं में मुख्य श्री त्रैलोक्यसागरजी महाराज आदि, साध्वियों में श्री दीपश्रीजी आदि, श्रावकों में लोहावट के श्रीयुत् गेनमलजी कोचर, फलोदी के श्रीयुत सुजानमलजी गोलेछा, स्व० फूलचंदजी गोलेछा, जोधपुर के स्व० कानमलजी पटवा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। शान्त, दान्त, धीर गुण योग्य गणाधीश को पाकर साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूप चतुर्विध संघ ने अपना अहोभाग्य माना।

समुदाय वृद्धि

गणाधीश्वर श्री हरिसागरजी महाराज के अनुशासन में करीब सवासो साधु-साध्वियों की अभिवृद्धि हुई। उस समय आपकी आज्ञा में करीब दो सौ साधु-साध्वियाँ थी। साधुओं में कई महात्मा आबाल-ब्रह्मचारी, प्रखरवक्ता, महातपस्वी, विद्वान् और कवि रूप से जैन शासन की सेवा की। साध्वियों के तीन समुदाय (१-प्रवर्तिनी श्री भावश्रीजी का, २-प्र० श्री पुण्यश्रीजी का और ३-प्र० श्री सिंहश्रीजी का)। इनमें भी कई आजीवन ब्रह्मचारिणी, विशिष्ट व्याख्यानदात्री, महातपस्विनी एवं विदुषी प्रचारिका रूप में जैन सिद्धान्तों का प्रचार किया। अन्यान्य गच्छीय साधुओं के जैसे कच्छ, काठियावाड, गुजरात आदि जैन प्रधान देशों में आपके साधु-साध्वी प्रचार करते ही हैं परन्तु मारवाड़, मालवा, मेवाड़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, आदि अजैन प्रधान विकट प्रदेशों में भी प्रायः ये लोग ही सुचारु प्रचार कर शासन की अनुपम सेवा की।

प्रतिष्ठाएँ

गणाधीश्वरजी की अध्यक्षता में कई जिनमन्दिरों की और गुरु मन्दिरों की पुण्य प्रतिष्ठाएँ हुई हैं। सुजानगढ़ में श्री पन्नेचंदजी सिंघी के बनाये श्री पार्श्वनाथ स्वामी के मन्दिर की, केलु (जोधपुर) में पंचायती श्री ऋषभदेव स्वामी के मन्दिर की, मोहनवाडी (जयपुर) में सेठ श्री दुलीचंदजी हमीरमलजी गोलेछा द्वारा विराजमान किये श्री पार्श्वनाथ स्वामी की, श्री सागरमलजी सिरहमलजी संचेती के बनाये श्री नवपद पट्ट की, कोटा में दिवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी के और हाथरस (उ० प्र०) में सेठ बिहारीलाल मोहकमचंदजी के बनाये श्री दादा-गुरु के मन्दिरों की, लोहावट में पंचायती गुरु मन्दिर में गणनायक श्री सुखसागरजी महाराज साहब की और ग० श्री भगवानसागरजी म० एवं श्री छगनसागरजी म. के मूर्ति-चरणों की प्रतिष्ठाएं उल्लेखनीय है।

उद्यापन

गणाधीश्वरजी की अध्यक्षता में कई धर्मप्रेमी श्रीमान् श्रावकों ने अपनी-अपनी तपस्याओं की पूर्णाहूति के उपलक्ष

में बड़े-बड़े उद्यापन महोत्सव किये हैं। उनमें फलोदी (मारवाड़) में श्री रतनलालजी गोलेछा का किया हुआ श्री नवपदजी का, कोटा में दिवान बहादुर सेठ केसरीसिंहजी का किया हुआ पौष-दशमी का, जयपुर में सेठ गोकलचन्दजी पुंगलिया, सेठ हमीरमलजी गोलेछा, सेठ सागरमलजी सिरहमलजी, सेठ विजयचन्दजी पालेचा आदि के किये हुए ज्ञान पंचमी, नवपदजी और वीसस्थानकजी के, तीवरी (मारवाड़) में श्रीमती जेठीबाई का किया हुआ ज्ञान-पंचमी का और देहली के लाला केसरचन्दजी बोहरा के किये हुए ज्ञानपंचमी और नवपद जी के उद्यापन महोत्सव विशेष उल्लेखनीय हुए हैं।

तीर्थयात्रा संघ

पूज्य गणाधीश्वरजी के पवित्र उपदेश से प्रेरित हो कई भव्यात्माओं ने तारणहार तीर्थों की यात्रा के लिये छरी पालक बड़े-बड़े संघ निकाले। उनमें श्री जेसलमेर महातीर्थ के लिए फलोदी से पहली बार सेठ सहसमलजी गोलेछा द्वारा और दूसरी बार सेठ सुगनमलजी गोलेछा की धर्मपत्नी श्रीमती राधाबाई द्वारा, श्री बारेजा पार्श्वनाथ तीर्थ के लिये मांगरोल से पहली बार सेठ जमनादास मोरारजी द्वारा और दूसरी बार सेठ मकनजी कानजी द्वारा, श्री अजारा पार्श्वनाथ तीर्थ के लिये वेरावल से खरतरगच्छ पंचायती द्वारा, तालध्वज महातीर्थ के लिये श्री पालीताना से आहोर निवासी सेठ चन्दनमल छोगाजी द्वारा, तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचलजी के लिए अहमदाबाद से सेठ डाह्याभाई द्वारा और देहली से श्री हस्तीनापुर महातीर्थ के लिये लाला चांदमलजी घेवरिया की धर्मपत्नी श्रीमती कपूरीदेवी द्वारा आदि छरी पालते हुए बड़े-बड़े संघ विशेष उल्लेख योग्य हुए हैं।

संस्थाएं

पूज्य गणाधीश्वरजी के अमोघ उपदेश से कई शहरों में शिक्षालय, पुस्तकालय, मित्रमण्डल आदि कई संस्थाएं स्थापित हुई हैं। पालीताना में श्री जिनदत्तसूरि ब्रह्मचर्याश्रम, जामनगर में श्री खरतरगच्छ ज्ञानमन्दिर-जैनशाला, लोहावट में जैन मित्र मण्डल व श्री हरिसागर जैन पुस्तकालय, कलकत्ते में श्री श्वेताम्बर जैन सेवा संघ-विद्यालय, बालुचर (मुर्शिदाबाद) में श्री हरिसागर जैन ज्ञानमन्दिर-जैन पाठशाला आदि विशिष्ट संस्थाएं समाजसेवा और जैन संस्कृति का प्रचार कर रही हैं।

पुरातत्त्व रक्षा

पूज्य गणाधीश्वरजी ने श्री सिद्धाचल तीर्थाधिराज पर 'खरतर वसही' के प्राचीन इतिहास की सुरक्षा के निमित्त प्रचण्ड आन्दोलन करके श्री आनन्दजी कल्याणजी की पेढ़ी के किसी मताभिनिवेशी मेनेजर के हटाया हुआ 'श्री खरतर वसही' नाम का साइन बोर्ड उसी पेढ़ी के जरिये वापिस लगवाया। वही श्री खरतरगच्छ की बिखरी हुई शक्ति कों संगठित करने के लिये श्री खरतरगच्छ संघ सम्मेलन का वृहद् आयोजन करवाया। बीकानेर में श्री क्षमाकल्याणजी के और जयपुर में पंचायती के प्राचीन हस्तलिखित जैन ज्ञानभण्डार का जीर्णोद्धार करवाया। कई तीर्थों में बिराजित मूर्तियों के प्राचीन शिलालेखों का, प्रभावक आचार्यों की कई प्राचीन पट्टावलियों और पुण्य प्रशस्तियों का वृहत् संग्रह आपने तैयार किया था।

साहित्यिक प्रवृत्ति

पूज्य गणाधीश्वरजी श्री उववाई सूत्र का सटीक हिन्दी अनुवाद, दादागुरु श्री जिनदत्तसूरिजी महाराज की ऐतिहासिक पूजा, महातपस्वी श्री छगनसागरजी महाराज का दिव्य जीवनवृत्त, हरि-विलास स्तवनावली के दो भाग आदि कई ग्रन्थों का नव सर्जन किया है। लोहावट से प्रकाशित होने वाले श्री सुखसागर ज्ञान बिन्दु जिनकी संख्या ५० से अधिक है- आपकी साहित्यक भावना का मधुर फल है। इन्हीं ज्ञान बिन्दुओं से सुप्रसिद्ध इतिहास लेखक पं० लालचन्द भगवानदास गाँधी द्वारा लिखित श्री जिनप्रभसूरिजी म० का ऐतिहासिक जीवन चरित्र, जयानन्द-केवली चरित्र, भाव प्रकरण, संबोध-सत्तरी आदि महत्वपूर्ण साहित्य ग्रन्थों का

प्रकाशन हुआ है। श्री हिन्दी जैनागम-सुमति प्रकाशन कार्यालय कोटा से प्रकाशित होने वाले-जैनागम साहित्य के लिये आपश्री के सदुपदेश से भागलपुर के रहीस रायबहादुर सुखराजजी ने, उनके सुपुत्र बाबू रायकुमार सिंह जी ने, अजीमगंज के राजा विजयसिंह जी की माता श्री सुगनकुमारीजी ने और कई श्रीमानों ने काफी सहयोग किया। आपकी अमूल्य-साहित्यक सम्पत्ति का स्व. बाबू पूरणचन्दजी नाहर एम. ए. बी. एल., बिहार पुरातत्त्व विभाग के प्रमुख प्रोफेसर जी० सी० चन्द्रा साहब, राय बहादुर वृजमोहन जी व्यास आदि जैन अजैन विद्वान बहुत आदर करते रहे हैं।

विहार

पूज्य गणाधीश्वरजी ने अपने ४९ वर्ष के लम्बे दीक्षा पर्याय में संयम की साधना, तीर्थों की स्पर्शना और लोक-कल्याण की विशिष्ट भावना से प्रेरित हो काठियावाड़, गुजरात, राजपूताना-मारवाड़, मेवाड़, मालवा, यू० पी०, पंजाब, बिहार, बंगाल आदि प्रदेशों में विहार करके कर्मवाद, अनेकान्तवाद, अहिंसावाद आदि मुख्य जैन सिद्धान्तों का प्रचार किया है। आपके हृदयंगम उपदेशों से प्रभावित होकर कई बंगाली भाइयों ने आजीवन मत्स्य, मांस और मदिरा का त्याग करके जीवन को आदर्शमय बनाया।

आपने तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचल, तालध्वज, गिरनार, प्रभासपाटन, पोर्तुगीज साम्राज्य के दीव तीर्थ, शंखेश्वर, तारंगा, अहमदाबाद, पाटण, पालनपुर, आबू, देलवाड़ा, राणकपुर, जैसलमेर, लोद्रवा, नाकोड़ा, करेड़ा पार्श्वनाथ, केशरियानाथ, अजमेर, जयपुर, देहली, हस्तिनापुर, सौरिपुर, कम्पिलपुर, रत्नपुरी, अयोध्या, कानपुर, लखनऊ, बनारस, सिंहपुरी, चन्द्रपुरी, पटना, चम्पापुरी, श्री सम्मेतशिखरजी, कलकत्ता, मुर्शिदाबाद, भद्दिलपुर आदि तारणहार तीर्थों की यात्राएं की हैं।

आचार्य पद

पूज्य गणाधीश्वरजी को विक्रम संवत् १९६३ में महातपस्वी श्री छगनसागरजी महाराज ने और जोधपुर आदि शहरों के प्रमुख जैन संघ ने लोहावट में गणाधीश्वर पूज्य श्री सुखसागरजी महाराज के समुदाय के गणाधीश पद से सुचारु रूप से विभूषित किया था। फिर भी अजीमगंज (मुर्शिदाबाद) के राजमान्य धर्मप्रेमी जैन संघ ने कलकत्ता, देहली, लखनऊ, फलोदी आदि नगरों के प्रमुख व्यक्तियों के विशाल जनसमूह के बीच महा समारोह के साथ वि०सं० १९९२ मार्गशीर्ष शुक्ला १४ को विजय मुहूर्त में 'श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज की जय' ध्वनि के साथ अभिनन्दन पूर्वक आचार्य पद से आपको विभूषित किया।

आप दो वर्ष तक जेसलमेर में विराजे और वहाँ प्राचीन खरतरगच्छीय श्री जिनभद्रसूरि ज्ञान-भण्डार का निरीक्षण किया। साथ ही ५ पंडित और ५ लहिये (लेखक) रखकर गुरुदेव श्री ने प्राचीन अलभ्य ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ कराई, संशोधनात्मक कार्यों में विशेष श्रम व अवस्थावश गुरुदेव का स्वास्थ्य बिगड़ता गया। जेसलमेर से गुरुदेव ने विहार किया, रास्ते में विशेष तबियत बिगड़ने से आचार्य श्री ने फरमाया- मैं अपना अन्तिम समय किसी तीर्थ पर व्यतीत करना चाहता हूँ अत: आप श्री फलवर्द्धी पार्श्वनाथ तीर्थ मेड़तारोड़ पधारे, स्वास्थ्य प्रतिदिन गिरता ही गया, आहार लेना भी बन्द किया और अर्हम् अर्हम् ध्वनि लगाते रहे। दो दिन-रात निरन्तर ध्वनि करते रहे। अन्त में बीकानेर, जोधपुर आदि से बड़े-बड़े वैद्य, डॉक्टर आये किन्तु गुरुदेवश्री ने अपना आयुष्य सन्निकट जानकर 'अप्पाणं वोसिरामि' कर दिया।

संवत् २००६ पोष वदि ८ मंगलवार प्रात:काल सूर्योदय के पश्चात् आप श्री सर्व चतुर्विध संघ को विलखता हुआ छोड़कर स्वर्ग पधार गये। मेडतारोड में अग्नि संस्कार स्थल पर गुरुमंदिर बनाकर चरण-पादुका बिराजित की गई। आपकी दिव्य स्मृति को चिरत्व प्रदान करते हुए पूज्य कविसम्राट आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरीश्वरजी म. की प्रेरणा से तीर्थाधिराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ पर आपश्री के पूनीत नाम से 'श्री जिनहरि विहार' धर्मशाला का निर्माण कराया गया, जो चतुर्विध संघ की सेवा में अहर्निश अग्रगण्य है।

(मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि अष्टम-शताब्दी
स्मृति-ग्रन्थ से आंशिक संशोधन सह साभार)

सोलह सतियाँ
कथानक
13

विलक्षण वैराग्यवती सती द्रौपदी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गतांक से आगे...

इधर युधिष्ठिर ने जैसे ही पीछे मुड़कर देखा, चिन्ता की लकीरें माथे पर उभर आयी।

भीम ! अर्जुन ! द्रौपदी कहाँ छूट गयी? इस घने जंगल में खोज पाना भी तो सरल नहीं होगा।

पांचों भाई अलग-अलग दिशाओं में द्रौपदी की खोज में प्रयत्नशील हो गये पर कहीं कोई सुराग नहीं मिला। घण्टों-घण्टों की मेहनत बेकार गयी। थक हारकर आखिर उन्हें आगे की राह पकड़नी पड़ी। दिन पर दिन गुजरते रहे पर द्रौपदी का कहीं कोई अता-पता नहीं चला। जिस बस्ती में जाते, वहाँ पूछ-परच करते पर नकारात्मक उत्तर मिलता।

एक बार कुन्ती ने विचित्र सपना देखा कि यहाँ से उत्तर दिशा में द्रौपदी साधनारत है। उसने स्वप्न में प्राप्त संकेत पुत्रों के सम्मुख रखा। भगवान को लाख-लाख धन्यवाद देते हुए वे उत्तर दिशा की ओर बढ़ चले।

काफी दूरी तय करने के बाद वे एक बस्ती में आकर रूके। आदिवासी क्षेत्र....आदिवासी लोग ! उनके मुँह पर एक ही चर्चा- प्रशंसा ! देखो तो अपनी ममतामयी माँ का चमत्कार । शेर-बकरी, बिल्ली-चूहा एक घाट पानी पीते हैं।

दूसरा व्यक्ति बोला-इससे भी बड़ा आश्चर्य ! भयंकर सर्पराज आया और उनकी प्रदक्षिणा देकर प्रत्यावर्तित हो गया।

ओहो ऽऽऽ ! उनके आभामण्डल का प्रभाव कैसा अद्‌भुत! जैसे जंगल में मंगल की रचना कर रही है हमारी माँ ! खुश्बू से भरा व्यक्तित्व । कभी अमी की वर्षा तो कभी केसर की फुहार।

लोगों की चर्चा ने पाण्डवों के मन में एक आशा की किरण जगा दी। उन्होंने एक व्यक्ति से निवेदन किया-अरे भैया ! तुम्हारी माँ के हमें भी दर्शन करवा दो, कदाचित् हमारी उलझनें भी सुलझ जाये।

वे भद्रिक लोग भला क्यों इन्कार करें। पाण्डुपुत्र उनके पीछे-पीछे सौ-दो सौ कदम की दूरी पर सुरम्य प्राकृतिक सुषमा की गोद में गहरी गुफा में पहुँचे।

द्रौपदी उस समय ध्यानस्थ थी। प्यासे को शीतल जल पाकर जितनी प्रसन्नता होती है, उससे भी अधिक प्रसन्न पाण्डव थे, द्रौपदी के रूप में खोयी हुई एक निधि प्राप्त हुई।

द्रौपदी एकान्त-साधना की ऊर्जा से परिपूर्ण होकर पुनः गन्तव्य की ओर चल पड़ी। बस्ती वालों ने माँ को भावभीनी विदाई दी।

घूमते कालचक्र के साथ बारह वर्षों की नियत अवधि परिपूर्ण हुई। अब अज्ञातवास का मात्र एक वर्ष अवशिष्ट था। किसी को एक प्रतिशत भी गंध न लगे, इस तरह अपने आपको छिपाकर उन्हें एक वर्ष की कालावधि पसार करनी थी। वे अनमोल छह मोती, जो एक ही धागे में पिरोये हुए हैं, मजबूरीवश उन्हें अलग-अलग होना पड़ा।

द्रौपदी की नियुक्ति विराट राजा की महारानी का अन्तःपुर जहाँ मुस्काता है, वहाँ हुई है।

हस्तिनापुर की महारानी एक सेविका बनकर सेवा के बल पर न केवल राजा विराट् की महारानी का दिल जीता अपितु कार्यकुशल, विश्वस्त, योग्य और धैर्य की प्रतिमा के रूप में अपनी पहचान भी कायम कर ली।

उसने अपना नाम रखा-सैरन्ध्री ! अपनी अंगुलियों की विविध कलाओं से उसने रानी सुदेष्णा के सौन्दर्य को नया रूप-निखार दिया और महारानी की सर्वाधिक

विश्वस्त सेविका के रूप प्रसिद्ध हो गयी।

महारानी के भाई कीचक का एक बार भगिनी से मिलने के लिये आना हुआ। सैरन्ध्री पर पड़ी एक नजर उसके मन में अनेक चाहतें जगा गयी। वैसे भी वह कामुक वृत्ति वाला था। द्रौपदी के सौन्दर्य ने उसके दिन का चैन और रात की नींद छीन ली।

द्रौपदी किस मिट्टी की बनी है, कामवासना के गट्टर में जीने वाले उस कीड़े को भला क्या पता था? वह दासियों के साथ स्वर्णाभूषण भेजने लगा पर द्रौपदी उन अपवित्र आभूषणों का स्पर्श किये बिना ही लौटा देती। इन्कार-इन्तजार के साथ बेचैनी बढ़ती रही। और एक दिन तो सैरन्ध्री जब आवास स्थल की ओर जा रही थी, कीचक ने तो एकान्त पाकर उसका हाथ पकड़ लिया।

द्रौपदी तत्काल हाथ छुड़ा गंतव्य की ओर बढ़ गयी। मन में आया कि इस कीचक की अश्लील हरकतों का भण्डाफोड़ महारानी के सामने कर दूं परन्तु अपने गुप्त वर्षावास की स्थिति में कुछ भी कहना उचित नहीं लगा। कीचक की अभद्र मनःस्थिति से पाण्डुपुत्र क्रुद्ध हुए बिना नहीं रहे।

पांचाली! तुमने अगर पहले ही संकेत दे दिया होता तो ठीक रहता। रोग और शत्रु को पालना उचित नहीं । उन्हें तो तत्काल समाप्त कर देना चाहिये। दूसरे दिन भीम वेश परिवर्तित कर सैरन्ध्री के रूप में प्रस्तुत हुआ। एकान्त में कीचक की अश्लील हरकत पर उसके मुख पर ऐसा जोरदार मुक्का जड़ा कि दूसरे ही पल उसके प्राण पंचतत्त्व में विलीन हो गये।

वनवास की अवधि पूर्ण करके लौटने पर दुर्योधन राज्याधिकार देने से मुकर गया। अन्ततोगत्वा पाण्डवों और कौरवों के मध्य महायुद्ध हुआ जो महाभारत के नाम से विश्व-विश्रुत है।

इसी युद्ध के दौरान एक हृदयद्रावक घटना घटती है।

द्रौणपुत्र अश्वत्थामा के मन में घोर प्रतिशोध की ज्वाला धधक रही थी। रात्रि में सुख निद्रा में लीन द्रौपदी के पाँचों पुत्रों का वध करके वह नौ दो ग्यारह हो गया।

पाण्डुपुत्र दुःखी थे पर माँ द्रौपदी की पीड़ा का पार नहीं था। पाण्डु पुत्र-उपवन के इन सुकोमल फूलों ने उस हत्यारे का क्या बिगाड़ा था जिसने मेरी हरी-भरी जीवन वाटिका उजाड़ दी।

अश्वत्थामा कितना ही दूर क्यों न भाग जाये, चाहे किसी भी गुफा-कन्दरा में छिप जाये पर पाण्डुपुत्रों के लम्बे हाथों से कब बच सकता था।

पाण्डुपुत्रों ने उसे द्रौपदी के चरणों में पटकते हुए-बोले-द्रौपदी! इसे क्या सजा दी जाये?

द्रौपदी साध्वी की तरह क्षमामूर्ति बनकर बोली-इसे क्षमादान देना चाहिये।

तनिक हैरानी से युधिष्ठिर बोले-पांचाली! क्या तुम इतनी जल्दी भूल गयी कि इसी दुष्ट ने हमारे पाँचों पुत्रों को छीना है।

स्वामिन्! भूली नहीं पर इसके प्राण लेने से मुझे क्या मिलना है? इसके शूली पर चढ़ जाने से न तो मेरी आँखों के तारे वापस लौट सकते हैं, न मुझे सुख और सुकून मिल सकता है।

फिर मुझे यह प्रतिपल याद है कि अश्वत्थामा भी किसी माँ का पुत्र है। पुत्रों की विरहाग्नि में मैं जिस तरह पल-पल जल रही हूँ, वैसे ही इसके अभाव में गुरु पत्नी को भी विरह व्यथा सहनी पड़े, यह मैं नहीं चाहती।

तत्क्षण तनिक गंभीर होकर द्रौपदी उपदेशात्मक शैली में मुखर होती है-हिंसा से हिंसा, वैर से वैर कभी भी शान्त नहीं होता। कोई व्यक्ति यदि घृत डालकर आग का शमन करना चाहे तो क्या वह संभव होगा?कभी नहीं ! प्रेम, मैत्री और अहिंसा वे अमर तत्त्व हैं, जो अमरत्व का अमृत फल दे सकते हैं। प्राणी मात्र से मैत्री करना यह मंत्र कहने व सुनने के लिये नहीं, आचरण में उतारने के लिये है।

(क्रमशः)

गोत्र का इतिहास
20

गांग, पालावत, दुधेरिया, गिडिया, मोहिवाल, टाडरवाल, वीरावत आदि गोत्रों का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

मेवाड़ देश के मोहिपुर नामक नगर पर नारायणसिंह परमार का राज्य था। राज्य छोटा था। एक बार चौहानों ने मोहिपुर पर चढ़ाई कर दी। नगर को चारों ओर से घेर लिया। चौहानों की सेना विशाल थी जबकि मोहिपुर की सेना अल्प! फिर भी बड़ी वीरता के साथ परमारों ने चौहानों के साथ युद्ध किया। युद्ध लम्बे समय तक चला। न चौहान जीतते दीख रहे थे, न परमार हारते!

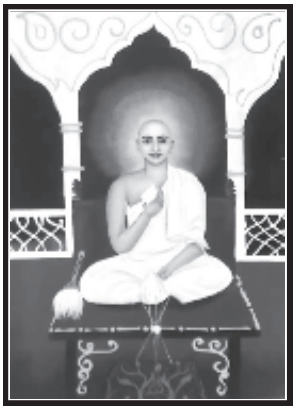

पर बीतते समय के साथ परमारों की सेना अल्प होने लगी। धन का अभाव भी प्रत्यक्ष होने लगा। इस स्थिति ने शासक नारायणसिंह को चिंतित कर दिया।

अपने पिता को चिंताग्रस्त देख कर उनके पुत्र गंगासिंह ने कहा- पिताजी! आप चिन्ता न करें। आपको याद होगा। पहले अपने नगर में जैनाचार्य जिनदत्तसूरि का पदार्पण हुआ था। वे तो अभी वर्तमान में नहीं है। परन्तु उनके शिष्य एवं पट्टधर आचार्य जिनचन्द्रसूरि अजमेर के आसपास विचरण कर रहे हैं। उनकी महिमा का वर्णन मैंने सुना है। आप आदेश दें तो मैं उनके पास जाना चाहता हूँ। वे अवश्य ही हमें इस विपदा से उबारेंगे।

नारायणसिंह ने कहा- पर तूं उनके पास जायेगा कैसे! अपने नगर को तो चारों ओर से शत्रु सेना ने घेर रखा है।

गंगासिंह ने कहा- आपका आदेश प्राप्त कर मैं एक ब्राह्मण का छद्म वेष बना कर जाऊँगा।

उसने वैसा ही किया। उसने आचार्य जिनचन्द्रसूरि के समाचार प्राप्त कर अजमेर के पास किसी गांव में उनकी शरण में जा पहुँचा। गुरुदेव को वंदन करके अपना दर्द निवेदित किया। प्रार्थना की- भगवन्! आप ही हमें उबार सकते हो।

गुरुदेव ने अत्यन्त धीरज से उनकी सारी बात सुनी। फिर उसे श्रावक धर्म स्वीकार करने का उपदेश दिया। गुरुदेव का आदेश पाकर उसने सप्त व्यसनों का त्याग किया। वह श्रावक धर्म स्वीकार करने को उत्सुक हो उठा।

आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने जया विजया जयन्ता अपराजिता इन देवियों का स्मरण किया। विजया देवी ने प्रकट होकर एक विशिष्ट अश्व प्रदान किया।

आचार्य जिनचन्द्रसूरि ने गंगासिंह को बुलाकर वह मांत्रिक अश्व उसे प्रदान किया और कहा- जाओ! इस एक अश्व के कारण शत्रु सेना को तुम्हारी असंख्य सेना नजर आयेगी। वे वहाँ से भयग्रस्त होकर विदा हो जायेंगे। पर तुम अपने श्रावक धर्म को याद रखना।

गंगासिंह प्रसन्न मन से उस घोडे पर सवार हो अपने नगर पहुँचा। ज्योंहि शत्रु सेना की नजर गंगासिंह पर पडी तो पाया कि लाखों की संख्या में शस्त्र अस्त्र सहित घुडसवार युद्ध के मैदान में उतर पडे हैं। लगता है किसी बाहर के राजा ने सहयोग के लिये अपनी सेना भेजी है।

चौहानों ने वहाँ से रवाना होने में जरा भी देर नहीं की। राजा नारायणसिंह अपने किले की प्राचीर से यह दृश्य देख रहा था। वह समझ नहीं पा रहा था कि मेरी सहायता करने के लिये लाखों की यह सेना किसने भेजी है?

तभी गंगासिंह उनके सम्मुख उपस्थित हुआ। उसने

आचार्य भगवंत के दर्शन से लेकर सारी कथा अपने पिताजी को सुना दी।

नारायणसिंह का हृदय परम श्रद्धा और अहोभाव से भर उठा। राजा नारायणसिंह उपकृत होकर अपने सोलह पुत्रों को साथ लेकर आचार्य जिनचन्द्रसूरि की सेवा में पहुँचा और अपने नगर में पदार्पण करने की विनंती की। योगानुयोग गुरुदेव मोहिवाल पधारे।

आचार्य भगवंत का धर्म उपदेश सुन कर राजा नारायणसिंह को सत्य धर्म का बोध हुआ। उसने परिवार सहित जैन धर्म को स्वीकार किया।

गुरुदेव ने सोलह पुत्रों के नाम से सोलह गोत्र स्थापित किये।

सबसे बडे पुत्र का नाम मोहिवाल था, उसके वंशज मोहिवाल कहलाये।

गंगासिंह से गांग गोत्र गतिमान् हुआ। दुधेराव के वंशज दुधेडिया/दुधेरिया कहलाये। इसी प्रकार पालावत, गिडिया/गडिया, बांभी, गोढवाढ, थरावता, खुरधा, पटवा, गोप, टोडरवाल, भाटिया, आलावत, वीरावत, गोढ गोत्रों की स्थापना हुई। विक्रम की तेरहवीं शताब्दी के प्रारंभ में द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि द्वारा इन गोत्रों की स्थापना हुई है।

अजिमगंज निवासी दुधेडिया परिवार बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने कई स्थानों पर जिन मंदिर, दादावाडियों आदि का निर्माण किया है।

गिडिया गोत्र के जोधपुर निवासी श्री राजारामजी बहुत ही प्रसिद्ध व्यक्तित्व का नाम है। इन्होंने पूज्य आचार्य श्री जिनहर्षसूरिजी म. आदि सहित महोपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. की पावन निश्रा में शत्रुंजय तीर्थ का छह री पालित यात्रा संघ के आयोजन में श्री लूणिया परिवार के साथ पूरी भागीदारी निभाई थी। जोधपुर के समीप मंडोर में श्री पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर का निर्माण आपने ही कराया था।

❋

खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह के संदर्भ में बैठक संपन्न

सूरत 29 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन सानिध्यता में सूरत शहर के हरिपुरा स्थित प्राचीन दादावाडी के भव्य वातावरण में खरतरगच्छ सहस्त्राब्दी समारोह के संबंध में एक बैठक का आयोजन ता. 29 नवम्बर को किया गया।

बैठक की अध्यक्षता समारोह समिति के अध्यक्ष विधायक श्री मंगलप्रभातजी लोढ़ा ने की। इस बैठक में संयोजक संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, श्री भंवरलालजी छाजेड, श्री पदमजी टाटिया, श्री दीपचंदजी बाफना, श्री रतनलालजी बोहरा हाला वाले, श्री पदमजी बरडिया, श्री सुरेशजी छाजेड, श्री रमेशजी लूंकड समेत सूरत के गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित थे।

श्री लोढाजी ने कहा- यह हमारा सद्भाग्य है कि सहस्त्राब्दी जैसा महान् समारोह मनाने का हमें अवसर प्राप्त हो रहा है। इसे रचनात्मक रूप से हमें मनाना है।

रायपुर श्री संघ की ओर से सहस्त्राब्दी समारोह रायपुर में मनाने के लिये उनका निवेदन पत्र प्राप्त हुआ। इस पर भी विचार विमर्श किया गया। पूर्व में दुर्ग श्री संघ की ओर से भी निवेदन पत्र प्राप्त है।

समारोह को ऐतिहासिक बनाने के लिये कई बिन्दुओं पर विचार विमर्श किया गया। ज्ञात रहे सहस्त्राब्दी समारोह सन् 2022 फरवरी-मार्च में मनाना प्रस्तावित है। तारीख व स्थल की घोषणा शीघ्र ही पूज्य गच्छाधिपतिश्री द्वारा की जायेगी।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

खरतरगच्छ की महान् विभूति दानवीर सेठ मोतीशाह

—चांदमल सिपाणी

नाहटा गोत्रीय मूर्तिमान धर्मरूप संघपति स्व. सेठ मोतीशाह ने धार्मिक संस्कार के बल पर प्राप्त की हुई लक्ष्मी का उपयोग रंग-राग में या संसार के क्षण-भंगुर विलासों में नहीं करके, आत्म श्रेय के अपूर्व साधन सम, स्वपर का एकांत कल्याण करने वाले मार्ग पर उपयोग किया। स्व. मोतीशाह ने गृहस्थ जीवन में जैन शासन की प्रभावना के तथा जीवदया आदि के अनेक सुन्दर कार्य अपने अमूल्य मानव जीवन में पुरुषार्थ पूर्वक आत्मा का ऊर्ध्वीकरण कर अपने जीवन को सफल किया।

बम्बई के श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ तथा गोडीजी पार्श्वनाथ के मंदिरों को देखकर सहसा मोतीशाह सेठ को धन्यवाद दिये बिना नहीं रहा जाता। इसके सिवा प्रति वर्ष कार्तिकी-चैत्री पूर्णिमा पर सम्पूर्ण बम्बई की जैन जनता भायखला के श्री आदिनाथ मंदिर पर जाती है। यह देवालय व दादावाड़ी सेठ मोतीशाह ने ही बनवाये और इसके आस-पास की विशाल जगह जैन समाज को दे गये। इसी प्रकार बम्बई पांजरापोल के आद्य प्रेरक-आद्य संस्थापक और मुख्य दाता थे। उनका नाम आज भी लोग दयावीर और दानवीर के रूप में स्मरण करते हैं। पांजरापोल को तन, मन और धन से सहयोग देकर अमर आत्मा सेठ मोतीशाह आज भी जीवित है। उस विशाल पांजरापोल का प्रत्येक पत्थर और ईंट उनके जीते जागते नमूने है।

केवल बम्बई में ही नहीं सम्पूर्ण भारतवर्ष के आबाल वृद्ध नर-नारी और विदेश से आने वाले पर्यटक जिसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं ऐसी श्री शत्रुंजय पर की 'मोतीशाह सेठ' की टूंक यहाँ याद आये बिना नहीं रहती। शाश्वत गिरी पर गहरी खाई को पूरकर, जिस मङ्गल धाम का निर्माण किया वह लाखों आत्माओं को आत्म कल्याण को-जीवन-सफल करने की प्रेरणा देने को मौजूद है। इसको देखकर कहे बिना नहीं रहा जाता कि सेठ मोतीशाह चाहे देह रूप में न हो परन्तु ऐसी अद्‌भुत कृति के सर्जकरूप में अमर है।

सेठ मोतीशाह में दान का गुण असाधारण था। विक्रम की उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बम्बई के जैन समाज में जो जागृति व प्रभाव फैला उसमें उनके यश का बहुत बड़ा श्रेय इन्हीं को है। कर्जदार के रूप में जीवन यात्रा को शुरु करने वाले व संवत् 1871 में सारे कुटुम्ब में अकेले रह जाने वाले जिस व्यक्ति ने दानवीरता के जो अनेक शुभ कार्य किये है, उसकी राशि अट्ठाईस लाख से भी ऊपर जाती है। इसमें सबसे बड़ा काम जिनमें उन्होंने धन व्यय किया वह है पालीताना के शत्रुंजय पर्वत पर मोतीवसहि टूंक का काम। इस कार्य के निर्माण में ग्यारह लाख एवं उनकी आज्ञा-इच्छा के अनुसार प्रतिष्ठा महोत्सव में सात लाख सात हजार मिलकर कुल अठारह लाख सात हजार खर्च हुआ। दो लाख रूपया बम्बई की पांजरापोल के लिये खर्च किये। इनके सिवा नीचे का वर्णन खास ध्यान देने लायक है। यह सब उनकी धर्म भावना, अहिंसा-मय हृदय और तत्कालीन जनता

की आवश्यकताओं पर उनकी तत्परता को बताते है।

भूलेश्वर:- कुंभार टुकडा के चिंतामणी पार्श्वनाथ देहरासर की प्रतिष्ठा सं. 1868 के दूसरे वैशाख सुद 8 शुक्रवार के दिन सेठ नेमचन्द भाई ने कराई और उसके लिये रु. 50000/-दिये।

भींडी बाजार:- शान्तिनाथ महाराज के देहरासर की प्रतिष्ठा सं. 1876 माह सुद 13 के रोज हुई, उसके लिये रु. 40000/-दिये।

कोट बोरा बाजार:- शान्तिनाथ महाराज के देहरासर की प्रतिष्ठा सं. 1865 माह वद 5 के दिन हुई उनकी प्रतिष्ठा के लिये और देहरासर के निर्माण हेतु उनके कुटुम्ब ने दो लाख रुपये खर्च किये। सेठ अमीचन्द जिस जगह रहते थे और जिसके पास शान्तिनाथजी का मन्दिर है वह वास्तव में उपाश्रय था जिसे उनके बड़े भाई नेमचन्द ने तीन हजार रुपये खर्च कर बनवाया था। पीछे और जगह लेकर वहाँ नेमचन्दभाई ने एक लाख और खर्च कर मन्दिर बनवाया। प्रतिष्ठा और निर्माण में कुल दो लाख खर्च हुए।

मदरास की दादावाड़ी की जमीन खरीदने और निर्माण हेतु रु. 50000/- सं. 1884 में दिये।

पालीताना की धर्मशाला (मोतीसुखीया) के निर्माण में रु. 86,000/-खर्च हुए।

भायखला की दादावाड़ी:- मन्दिर को जमीन, निर्माण व प्रतिष्ठा में (सं. 1885 मिगसर सुद 6) को लाख रुपये खर्च किये।

पायधुनी के आदीश्वरजी के मन्दिर की प्रतिष्ठा सं. 1882 के ज्येष्ठ सुद 10 के दिन हुई। उसकी उछामणि में पचास हजार की बोली बोली।

कर्जदारों को छूट- अंत समय नजदीक आया जान जिन कई अशक्त लोगों में रुपया लेना था उनको कर्ज मुक्त करने के लिये एक लाख रुपया छोड़ दिया।

इन सब का योग 28,08,000 अट्ठाइस लाख आठ हजार होता है।

इस मोटी रकम के अलावा छोटी-छोटी रकमें तो कई थीं जिनका कोई हिसाब नहीं। बम्बई की कोई चन्दा-पानडी ऐसी नहीं होती थी जिसमें उनका नाम न होता हो। इस प्रकार की रकम भी कई लाख है। आप प्राय: सब दान सेठ अमीचन्द साकरचन्द के नाम से ही देते थे और इसी में अपना गौरव समझते थे।

इनका रहन-सहन बिलकुल साधारण ही था। सिर पर सूरती पगडी और शरीर पर बालाबंधी केडियू लम्बो कडचलो वाला पहनते थे।

सं. 1855 में सेठ मोतीशाह के पिता की मृत्यु के बाद उनकी उत्तरोत्तर उन्नति होती गई। इसके बाद सारे जीवन में धन सम्बन्धी दु:ख तो इन्होंने देखा नहीं। उनके ग्रह सं. 1880 से तो और भी बलवान हो गये। कुंतासर के तालाब को पूरने के समय से लेकर के अंतिम तक दिनोंदिन बलवान ही होते रहे।

मोतीशाह सेठ का अपने मुनीमों के साथ सम्बन्ध कुटुम्बी जनों के समान था। उनकी यही इच्छा रहती थी कि उनके मुनीम भी उनके जैसे धनी बने। मुनीमों को अच्छे बुरे अवसरों पर उदारता पूर्वक मदद करते। सेठ मोतीशाह के मुनीम लक्षाधिपति हुए है, इसके कई उदाहरण मौजूद है। उनको टूँक में उनके मुनीमों ने मन्दिर बनवाये हैं। उनके यहां अधिक कार्यकर्त्ता जैन थे। इसके अलावा हिन्दू व पारसी व्यापारियों व कुटुम्बों के साथ भी अच्छा सम्बन्ध था। इनमें सम्बन्धित जैनों ने मोतीशाह टूंक में देहरासर बनाये।

हिन्दू व पारसी कुटुम्ब भी इनके प्रत्येक कार्य में हर प्रकार की सलाह एवं मदद देने को तैयार रहते थे। जिस समय उनके पुत्र खेमचन्द भाई ने पालीताणा का संघ निकाला तब सर जमशेदजी ने एक लाख रुपया खर्च किया यह उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण घटना है। इससे ज्ञात होता है कि परस्पर सहकार व सम्बन्ध किस प्रकार हृदय की भावना से निभाया जाता था। यही कारण था कि सेठ की मृत्यु के बाद पालीताणा संघ व प्रतिष्ठा के अवसर पर अनेक लोगों ने सहयोग दिया। उनके पुत्र खेमचन्द भाई तो एक राजा की तरह रहे।

धारावाहिक
कथा
11

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवराज की आँखों से नींद गायब थी। वह एक ओर युवरानी की निर्मल और निर्दोष पति-निष्ठा से प्रभावित था तो दूसरी ओर अपनी बाल्यावस्था की गलत प्रवृत्तियों से मुक्त नहीं हो पा रहा था। वह अपनी बुराईयों से दूर रहने की मानसिकता बनाना अवश्य परंतु तुरंत ही उसके दोस्तों की चौकडी पुनः उसे उन्हीं अपयश और विनाशकारी हरकतों में धकेल देती।

मन की चालबाजी को युवराज समझ रहा था पर समझते हुए भी अपनी हरकतें बदल नहीं पा रहा था। उसकी बंद आँखों में बार-बार युवरानी का निवेदन करता चेहरा घूम रहा था और साथ ही नटखट चंचल हिरणी जैसी बहिन सुनंदा की प्यार भरी मनुहार उसके कानों में जैसे अभी भी गूंज रही थी।

वह कह रही थी- भैया! मैं प्रतिवर्ष आपको राखी बांधती हूँ। बस आप मुझे राखी का उपहार दे दो। माताजी-पिताजी कितने उदास रहते हैं। मैं शरारतें करने के लिए आपको ढूंढती रहती हूँ पर, आप या तो सोये मिलते हैं या बाहर रहते हैं। हम सभी जीवन की खुशियां मिलकर कब बांटेंगे?आप हमें भी कुछ समय दीजिए। आप परिवार से इतने अलिप्त होकर मात्र दोस्तों के बीच अपनी सारी खुशियों बांटते है क्या यह उचित है?कहते-कहते उसका गला भर आया था।

युवराज अपनी मासूम लाडली बहिन की नाराजगी सह नहीं पाया। उसने लाड से उसके गालों को थपथपाते हुए कहा- ऐसा नहीं कहते गुडिया! तुमको क्या पता हमारे हृदय में अपनी बहिना के प्रति कितना प्यार छलकता है! तुम तो हमारे राजमहल की खुशबू हो। तुम्हारे साथ संवाद करना, तुमसे छेडछाड करना और तुम्हारी लम्बी-लम्बी चोटी खींचकर उसे घूमाना, हमें बहुत अच्छा लगता है। हम भी बहुत चाहते हैं कि तुम्हारे साथ समय बिताये पर पता नहीं राजमहल में पुनः आते हुए देर हो जाती है और तब तक तुम निद्रा देवी की गोद में चली जाती हो। अब से जल्दी आया करेंगे। अब एक बार मुस्करा दो। अपने से छः साल छोटी नन्हीं परी-सी राजदुलारी की चिकोटी काटते हुए युवराज ने कहा!

मासूम सुनंदा भाई की मीठी तकरार की प्यासी आज भाई की प्यारी बातें सुनकर भावुक हो गयी। वह स्वयं अत्यन्त सरल थी। छल-कपट व कथनी-करनी की भिन्नता उसमें नहीं थी। उसे लगा- भैया आज से बदल जायेंगे। अब वे मेरे साथ खेलेंगे। उसके कोमल हृदय में सपनों की मृदु उर्मियाँ तरंगित हो गयी। माँ को कहा- माँ! बताओ तो जरा कि आज मैं किससे बातें करके आयी हूँ।

क्या बात है बेटी! आज तेरे चेहरे पर अनोखा उल्लास है। अपनी बिटिया की पीठ सहलाते हुए महारानी ने पूछा! हाँ माँ! आज भैया से मैंने बहुत सारी बातें की और उन्हें वचनबद्ध भी कर दिया कि अब वे ज्यादा समय राजसभा और राजपरिवार में व्यतीत करेंगे। आपको और पिताजी को ज्यादा से ज्यादा खुशी देने का प्रयास करेंगे। आपको अच्छा लगेगा न?

महारानी के चेहरे पर राजदुलारी की बातें सुनकर उल्लास की उर्मियाँ चमकने लगी। परंतु दूसरे ही पल वे उदास हो गयी।

वे जानती थी कि युवराज ने आज तक कितनी ही बार इस प्रकार से आश्वस्त किया है, पर वे वक्त की आंधी से सब उडते ही नजर आये हैं। युवराज की कथनी कभी करनी नहीं बनी है। वे मात्र आश्वासन के पुलिंदे थमाकर अपने

कर्तव्य की इतिश्री कर लेते हैं। हमारे नसीब में शायद ये थोथे आश्वासन ही लिखे होंगे।

मैं जानती हूँ कि मैंने युवराज को आजतक कितने-कितने उपायों से अपने कर्तव्यों के प्रति सजग किया है!

आखिर नहीं संभला तो मैंने उसे महाराजा से कहकर युवराज भी घोषित करवा दिया। बहुधा देखा जाता है कि जिम्मेदारी व्यक्ति को गंभीर एवं कर्तव्य के प्रति जागरूक बनाती है। मैंने यहीं समझा था कि इतना बड़ा पद पाकर वह अपनी नादानी छोड देगा।

परंतु शीघ्र ही मेरी आशा निराशा में बदल गयी। वह कुछ दिन समयबद्ध नित्य क्रियाओं के प्रति सावधान रहा परंतु पुनः अपनी उसी गंदगी में आलोटने लगा।

मैंने तब भी पराजय स्वीकार नहीं की। मैंने एक और उपाय आजमाया। मैंने सर्वगुणसंपन्न रूप और यौवन की साक्षात् माधुरी लावण्यमयी राजकुमारी के साथ युवराज को विवाह के बंधनों से बांध दिया। युवरानी प्रथम दर्शन में ही मुग्ध कर दे, ऐसी विनम्र और भव्य नारीरत्न है परंतु, वह भी अपने बाहु पाश में युवराज को नहीं जकड पायी।

मैंने अनुभव किया है कि आखिर युवराज क्यों नर्तकियों और गणिकाओं के पीछे भागता है। युवरानी में ऐसी कौनसी न्यूनता है कि जिसकी पूर्ति वह गणिकाओं से करता है। बहुत गहरा चिंतन करने के बाद लगा कि पत्नी समर्पण की कविता बनकर अपने प्रियतम के श्रांत-क्लांत तन और मन को प्रसन्न कर सकती है परंतु वह गणिका की तरह दिखावटी, बनावटी और सजावटी रूप की ज्वाला बनकर न पुरुष को जला सकती है और न वासना का कीडा बनाकर उसके यौवन को खोखला कर सकती है। समर्पण को पढने के लिए हृदय की आँख चाहिए। ज्वाला को देखने के लिए तो स्थूल आँखें ही पर्याप्त है।

मेरी छोड़ो, उसे अपने पिताजी की भी शर्म कहाँ है। पिताजी ने प्रारंभ में तो सांकेतिक भाषा में उसे व्यसन मुक्त होने के लिए कहा था परंतु अभी कुछ दिन पूर्व तो संक्षेप में जैसे चेतावनी भरे स्वरों में कह दिया था कि सत्ता में चूर होकर तूं सोचता है कि मैं तेरी गलतियाँ माफ करूंगा तो तेरी गलतफहमी है। जिस दिन प्रजा द्वारा प्रमाण सहित अपराध पकड़ लिया जायेगा, उस दिन मेरे भीतर का पितृहृदय सुप्तावस्था में रहेगा और न्यायसंपन्न राजा अपना कर्तव्य पालन करेगा।

युवराज पिता की गंभीर चेतावनी सुनकर पश्चाताप पूर्वक अपराध मुक्त होने की प्रतिज्ञा करने की अपेक्षा निर्दोष प्रमाणित करने के लिए उनको ही गलत सिद्ध करने के तर्क प्रस्तुत कर रहा था। आखिर महाराजा ने अपने हृदय को मजबूत करते हुए उसके लिए राजकोष से खर्च बंद कर दिया फिर भी उसके चेहरे पर कोई अपराध बोध नहीं था। पता नहीं, इस परिवार का क्या होगा?

रानी अपने ही विचारों में ऐसी खो गयी थी कि आस-पास का सारा मंजर जैसे अदृश्य हो गया था। राजकुमारी ने अपनी मां को विचारों में खोया देखा तो वह वहाँ से अपने कक्ष में आ गयी।

इधर युवराज काफी देर से आँख मिचौनी का खेल खेलता रहा। जब देखा युवरानी गहरी नींद में सो गयी है तो उठा और पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार तैयार होकर कक्ष से बाहर आ गया। द्वारपाल तुरंत दौडता आया और उसने मस्तक झुकाकर पूछा- क्या आदेश है?आज्ञा करें।

युवराज ने कहा- मैं वनभ्रमण के लिए जा रहा हूँ। युवरानी जी जब जागे तो बता देना कि मैं रात्रि होने से पूर्व ही महल में लौट आऊंगा।

द्वारपाल ने सिर झुकाकर आज्ञा के प्रति सम्मान प्रकट किया। युवराज ने अश्वशाला से अपना अश्व लिया और सवार होकर अपने निजी अंगरक्षक के साथ अपने मित्र के घर की ओर रवाना हो गया।

योजनानुसार सर्वप्रथम वह नगर सेठ की हवेली के पीछे की ओर गया। उसने मन ही मन निर्णय किया था कि इस बार ऐसे कोष पर अपनी चौर्यकला प्रकट करनी है जिससे

सदा-सदा के लिए खर्च की चिन्ता समाप्त हो। उसने सुन रखा था कि नगर सेठ इस राज्य के श्रेष्ठ कोटि के धनाढ्य सेठ है। उनके गुप्त भंडार में अत्यन्त मुल्यवान अंलकारों से भरी हुई पेटियाँ है। एकाध पेटी भी उठा ली तो पर्याप्त है।

नगर सेठ की हवेली के पास तक आते-आते घोडे की गति धीमी कर दी। उसे हवेली के आसपास के क्षेत्र का सूक्ष्मता से निरीक्षण करना था। कहाँ से हवेली में प्रवेश किया जा सकता है, यह देखना था। पीछे का यह भाग लगभग जनशून्य था। इस ओर घण्टों में कोई आता-जाता था। युवराज ने अत्यन्त सावधानी पूर्वक दो चार बार घोडा इधर-उधर घुमाते हुए दीवार आदि की मोटाई, ऊंचाई और लम्बाई का अच्छी तरह निरीक्षण किया और फिर वहां से सांकेतिक गुफा में पहुंच गये।

वहाँ युवराज का मित्र वर्तुल उपस्थित था। पुष्पचूल के अतिरिक्त श्याम, सुकर्ण एवं मंगल ये सभी पुष्पचूल के व्यसनी मित्र थे। युवराज को देखते ही सभी खडे हो गये और कहा- आपके बिना हम सभी बिना सूरज का आकाश थे। हमारी शोभा आपसे ही है। आप हमारे हृदय की धड़कन है। आप भूल से भी हमारा त्याग मत करना। हम जानते हैं, आप भविष्य के ढ़िपुरी के भाग्यविधाता है। आपके व्यक्तित्व के समक्ष हम बहुत बौने हैं।

युवराज ने मुस्कराते हुए उनकी पीठ को थपथपाया और कहा- कैसी बातें करते हो! तुम्हारी हमारी दोस्ती के बीच न पद आ सकता है और न परिवार। छोडना होता तो कब का छूट गया होता। अब यह सब छोड़ो। बताओ कि आगे क्या करना है? मैं नगर सेठ के मकान का निरीक्षण करके आया हूँ। आगे से सेंध लगाना असंभव है। पीछे से फिर भी संभव है।

साथियों ने युवराज की जय जयकार की।

(क्रमशः)

खरतरगच्छ सहस्राब्दी वर्ष के उपलक्ष में शंखेश्वर से पाटण छ री पालित संघ 8 जनवरी 20 को

सूरत 30 नवंबर। छः री पालक संघ की तैयारियों की चर्चा हेतु पूज्य गुरुदेव अर्वति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में संयोजक, सहसंयोजक एवं केन्द्रीय समिति के पदाधिकारियों, शाखा अध्यक्षों की मीटिंग सूरत में सम्पन्न हुई।

खरतरगच्छ नामकरण के गौरवशाली इतिहास के सहस्राब्दी वर्ष (1000 वर्ष पूर्ण होने) के उपलक्ष में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद द्वारा आयोजित छः री पालित यात्रा संघ श्री शंखेश्वर महातीर्थ से पाटण महातीर्थ का संघ प्रस्थान 08 जनवरी 2020 को होगा एवं संघ माल महोत्सव 12 जनवरी को पाटण में होगा।

पद यात्रा संघ की लगभग काफी तैयारियां पूर्ण हो चुकी है। सुव्यवस्थित संचालन के लिए गुरुदेव की निश्रा में शंखेश्वर हाइट्स (पाल) में केयुप की राष्ट्रीय स्तर की मीटिंग हुई जिसमें चेयरमेन पदम बरडिया, अध्यक्ष सुरेश लूणिया, सचिव रमेश लुंकड़, संयोजक प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल, कोषाध्यक्ष राजीव खजांची, सहसंयोजक नरेश लूणिया, पुरषोत्तम सेठिया, भेरू लूणिया, पुरषोतम धारीवाल सहित केन्द्रीय समिति के पदाधिकारी एवं विविध शाखाओं के 40 से अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे।

संयोजक प्रदीप श्रीश्रीश्रीमाल ने मीटिंग में यात्रा से सम्बंधित बिन्दुओं जानकारी दी। विभिन्न समितियों का गठन कर केयुप के सदस्यों को जवाबदारी देना प्रारंभ किया गया। समिति के सदस्यों को 5 जनवरी को श्री शंखेश्वर तीर्थ पहुचना है।

-चम्पालाल छाजेड़, मीडिया प्रभारी, केयुप पैदल यात्रा संघ

अभिनन्दन मेरे मार्गदर्शक गुरुदेव का

–ॲड. गजेन्द्र देवीचंद भंसाली (हायकोर्ट, औरंगाबाद)

खरतरगच्छाधिपति परम पूज्य गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के अक्कलकुवा नगर में मंगल प्रवेश पर कोटी-कोटी वंदन!

अभिनन्दन! मेरे प्रेरणास्त्रोत, मेरे मार्गदर्शक गुरुदेव मणिप्रभ !
गंगा की निर्मल धारा सम, गुरु मणिप्रभ का है पावन जीवन।
मंगलमय प्रवेश के सुप्रभात में, करते हैं हम अभिनन्दन ।।१।।
जिनके मन में सदा लहराता, प्रेम दया का सागर।
जिनका जीवन बना है, शान्ति सुधारस गागर ।।२।।
जिनके मन में जलता दीपक, शुभ करुणा का हरपल ।
जिनके व्यवहारों में हँसता, चरित्र चन्द्र सुनिर्मल ।।३।।
जिनका जीवन है दिल की धड़कन, वाणी है ओजस्वी चंदन।
प्रतिष्ठा त्रिवेणी कार्यक्रम की मंगल बेला में, कोटी-कोटी अभिनंदन ।।४।।
युग-युग जीयो गुरु मणिप्रभ, दिव्य मंगल ज्योति अवतार है।
शासन के सिरताज गुरुदेव, आप ज्ञान गुणों के भंडार है ।।५।।
फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी को, दीपक का उजियारा।
पारस-रोहिणी वाटिका में, पूष्प खिला यह न्यारा ।।६।।
खरतरगच्छ के सजग प्रहरी, जगमग एक सितारा।
कान्तिसूरि का पट्टधर प्यारा, मरुधर का चमकता सितारा ।।७।।
जहाज-गज-मयूर-राजहंस-अवन्ति-सुघोषा घंट मंदिर की बनायी हैं शान निराली।
शासन-प्रभावक कार्यों को देखकर खिल जाती हैं मन उपवन की कली ।।८।।
प्रतिष्ठाएँ-दीक्षा-उपधान-छहरी पालित संघ को भाग्य से आपकी निश्रा मिलती हैं।
आपश्री के दर्शन-वंदन-पूजन-आशीर्वाद के लिए दुनियाँ हरदम तरसती हैं ।।९।।
सरलता-सहजता-तेजस्वीता-मधुरता-चुम्बकीय व्यक्तित्व के हैं दिव्य धनी।
न्याय-व्याकरण-ज्योतिष-आगम-प्राकृत-संस्कृत के हैं महाज्ञानी ।।१०।।
जन-मन हर्षित होता है गुरुदेव, सुनकर आपकी मीठी-अमृत वाणी।
जटाशंकर-जागरण का मार्मिक उद्‌बोधन, लाता हैं जीवन में नयी रोशनी ।।११।।
चाँद जैसे शितल-सूरज जैसा प्रकाश, फूल जैसी सुरभित-मणि जैसी उजास।
खरतरगच्छ शिरोमणि, शासन के सिरताज, भावभरी शुभ वंदना श्रीचरणों में आज ।।१२।।
साहित्य सुधा सम्राट सुपावन, काव्य कला मंदिर अभिराम।
शासन के सम्राट अलौकिक, दिव्य गणों के अनुपम धाम ।।१३।।
लाखों है उपकार गुरु मणिप्रभ के, हम न कभी भूल पायेंगे ।
जब तक है साँसें हमारी, हरपल आस्था सुमन चढायेंगे ।।१४।।
जिनशासन की है आन-बान-शान, दिल की चेतना में बसे हुए है भगवान।
धीरता-वीरता-गंभीरता की है पहचान, 'गजु' करता है शत्-शत् नमन ।।१५।।

स्वर विद्या

श्वास कला यानि स्वर विज्ञान

प्रस्तुति : गौतम संकलेचा

स्वर विज्ञान एक बहुत ही आसान विद्या है। इनके अनुसार स्वरोदय, नाक के छिद्र से ग्रहण किया जाने वाला श्वास है, जो वायु के रूप में होता है। श्वास जीव का प्राण है और इसी श्वास को स्वर कहा जाता है।

स्वर के चलने की क्रिया को उदय होना मानकर स्वरोदय कहा गया है तथा विज्ञान, जिसमें कछ विधियाँ बताई गई हों और विषय के रहस्य को समझने का प्रयास हो, उसे विज्ञान कहा जाता है। स्वरोदय विज्ञान एक आसान प्रणाली है, जिसे प्रत्येक श्वास लेने वाला जीव प्रयोग में ला सकता है।

स्वरोदय अपने आप में पूर्ण विज्ञान है। इसके ज्ञान मात्र से ही व्यक्ति अनेक लाभों से लाभान्वित होने लगता है। इसका लाभ प्राप्त करने के लिए आपको कोई कठिन गणित, साधना, यंत्र-जाप या कठिन तपस्या की आवश्यकता नहीं होती है। आपको केवल श्वास की गति एवं दिशा की स्थिति ज्ञात करने का अभ्यास मात्र करना है।

यह विद्या इतनी सरल है कि अगर थोड़ी लगन एवं आस्था से इसका अध्ययन या अभ्यास किया जाए तो जीवन पर्यन्त इसके असंख्य लाभों से अभिभूत हुआ जा सकता है।

卐 सूर्य, चंद्र और सुषुम्ना स्वर

सर्वप्रथम हाथों द्वारा नाक के छिद्रों से बाहर निकलती हई श्वास को महसूस करने का प्रयत्न कीजिए। देखिए कि कौन से छिद्र से श्वास बाहर निकल रही है। स्वरोदय विज्ञान के अनुसार अगर श्वास दाहिने छिद्र से बाहर निकल रही है तो यह सूर्य स्वर होगा। इसके विपरीत यदि श्वास बाएँ छिद्र से निकल रही है तो यह चंद्र स्वर होगा एवं यदि जब दोनों छिद्रों से नि:श्वास निकलता महसूस करें तो यह सुषुम्ना स्वर कहलाएगा। श्वास के बाहर निकलने की उपरोक्त तीनों क्रियाएँ ही स्वरोदय विज्ञान का आधार हैं।

सूर्य स्वर पुरुष प्रधान है। इसका रंग काला है। इसके विपरीत चंद्र स्वर स्त्री प्रधान है एवं इसका रंग गोरा है। इड़ा नाड़ी शरीर के बाई तरफ स्थित है तथा पिंगला नाड़ी दाहिनी तरफ अर्थात् इड़ा नाड़ी में चंद्र स्वर स्थित रहता है और पिंगला नाड़ी में सूर्य स्वर। सुषुम्ना मध्य में स्थित है, अत: दोनों ओर से श्वास निकले वह सुषम्ना स्वर कहलाएगा।

卐 स्वर को पहचानने की सरल विधियाँ

(1) शांत भाव से मन एकाग्र करके बैठ जाएँ। अपने दाएँ हाथ को नाक छिद्रों के पास ले जाएँ। तर्जनी अँगुली छिद्रों के नीचे रखकर श्वास बाहर फेंकिए। ऐसा करने पर आपको किसी एक छिद्र से श्वास का अधिक स्पर्श होगा। जिस तरफ के छिद्र से श्वास निकले, बस वही स्वर चल रहा है।

(2) एक छिद्र से अधिक एवं दूसरे छिद्र से कम वेग का श्वास निकलता प्रतीत हो तो यह सुषुम्ना के साथ मुख्य स्वर कहलाएगा।

(3) एक अन्य विधि के अनुसार आईने को नासाछिद्रों के नीचे रखें। जिस तरफ के छिद्र के नीचे काँच पर वाष्प के कण दिखाई दें, वही स्वर चालू समझें।

卐 जीवन में स्वर का चमत्कार

स्वर विज्ञान अपने आप में दुनिया का विशिष्ट ज्योतिष विज्ञान है जिसके संकेत गलत नहीं जाते। शरीर की मानसिक और शारीरिक क्रियाओं से लेकर दैवीय सम्पर्कों और परिवेशीय घटनाओं तक को प्रभावित करने की क्षमता रखने

वाला स्वर विज्ञान दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

स्वर विज्ञान का सहारा लेकर आप जीवन को नई दिशा दृष्टि दे सकते है, दिव्य जीवन का निर्माण कर सकते हैं, लौकिक एवं पारलौकिक यात्रा को सफल बना सकते हैं। साथ ही अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति और क्षेत्र की धाराओं तक को बदल सकने का सामर्थ्य पा जाते हैं।

अपनी नाक के दो छिद्र होते हैं। इनमें से सामान्य अवस्था में एक ही छिद्र से हवा का आवागमन होता रहता है। कभी दायां तो कभी बांया। जिस समय स्वर बदलता है उस समय कुछ सैकण्ड के लिए दोनों नाक में हवा निकलती प्रतीत होती है। इसके अलावा कभी-कभी सुषुम्ना नाड़ी के चलते समय दोनों नासिक छिद्रों से हवा निकलती है। दोनों तरफ सांस निकलने का समय योगियों के लिए योग मार्ग में प्रवेश करने का समय होता है।

बांयी तरफ सांस आवागमन का मतलब है आपके शरीर की इड़ा नाड़ी में वायु प्रवाह है। इसके विपरीत दांयी नाड़ी पिंगला है। दोनों के मध्य सुषुम्ना नाड़ी का स्वर प्रवाह होता है।

अपनी नाक से निकलने वाली साँस को परखने मात्र से आप जीवन के कई कार्यों को बेहतर बना सकते हैं।

सांस का संबंध तिथियों और वारों से जोड़कर इसे और अधिक आसान बना दिया गया है। जिस तिथि को जो सांस होना चाहिए, वही यदि होगा तो आपका दिन अच्छा जाएगा। इसके विपरीत होने पर आपका दिन बिगड़ा रहेगा। इसलिये साँस पर ध्यान दें और जीवन विकास की यात्रा को गति दें।

मंगल, शनि और रवि का संबंध सूर्य स्वर से है जबकि शेष का संबंध चन्द्र स्वर से। आपके दांये नथुने से निकलने वाली सांस पिंगला है। इस स्वर को सूर्य स्वर कहा जाता है। यह गरम होती है। जबकि बांयी ओर से निकलने वाले स्वर को इड़ा नाड़ी का स्वर कहा जाता है। इसका संबंध चन्द्र से है और यह स्वर ठण्डा है।

शुक्ल पक्ष:-

- प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया बांया (उल्टा)
- चतुर्थी, पंचमी एवं षष्ठी -दांया (सीधा)
- सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी बांया (उल्टा)
- दशमी, एकादशी एवं द्वादशी -दांया (सीधा)
- त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं पूर्णिमा बांया (उल्टा)

कृष्ण पक्ष:-

- प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया -दांया (सीधा)
- चतुर्थी, पंचमी एवं षष्ठी बांया (उल्टा)
- सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी -दांया (सीधा)
- दशमी, एकादशी एवं द्वादशी बांया (उल्टा)
- त्रयोदशी, चतुर्दशी, अमावस्या -दांया (सीधा)

सवेरे नींद से जगते ही नासिका से स्वर देखें। जिस तिथि को जो स्वर होना चाहिए, वह हो तो बिस्तर पर उठकर स्वर वाले नासिका छिद्र की तरफ के हाथ की हथेली का स्पर्श करे और उसी दिशा में मुंह पर हाथ फिरा लें।

यदि बांये स्वर का दिन हो तो बिस्तर से उतरते समय बांया पैर जमीन पर रखकर नीचे उतरें, फिर दायां पैर बांये से मिला लें और इसके बाद दुबारा बांया पैर आगे निकल कर आगे बढ़ लें।

यदि दांये स्वर का दिन हो और दांया स्वर ही निकल रहा हो तो बिस्तर पर उठकर दायी हथेली का स्पर्श करे और फिर बिस्तर से जमीन पर पैर रखते समय पर पहले दांया पैर जमीन पर रखें और आगे बढ़ लें।

यदि जिस तिथि को स्वर हो, उसके विपरीत नासिका से स्वर निकल रहा हो तो बिस्तर से नीचे नहीं उतरें और जिस तिथि का स्वर होना चाहिए उसके विपरीत करवट लेट लें। इससे जो स्वर चाहिए, वह शुरू हो जाएगा और उसके बाद ही बिस्तर से नीचे उतरें। स्नान, भोजन, शौच आदि के वक्त दाहिना स्वर रखें।

पानी, चाय, काफी आदि पेय पदार्थ पीने, पेशाब करने, अच्छे काम करने आदि में बांया स्वर होना चाहिए।

जब शरीर अत्यधिक गर्मी महसूस करे तब दाहिनी करवट लेट लें और बांया स्वर शुरू कर दें। इससे तत्काल शरीर ठण्डक अनुभव करेगा। जब शरीर ज्यादा शीतलता महसूस करे तब बांयी करवट लेट लें, इससे दाहिना स्वर शुरू हो जाएगा और शरीर जल्दी गर्मी महसूस करेगा। जिस किसी व्यक्ति से कोई काम हो, उसे अपने उस तरफ रखें जिस तरफ की नासिका का स्वर निकल रहा हो। इससे काम निकलने में आसानी रहेगी।

जब नाक से दोनों स्वर निकलें, तब किसी भी अच्छी बात का चिन्तन न करें अन्यथा वह बिगड़ जाएगी। इस समय यात्रा न करें अन्यथा अनिष्ट होगा। इस समय सिर्फ भगवान का चिन्तन ही करें। इस समय ध्यान करें तो ध्यान जल्दी लगेगा।

दक्षिणायन शुरू होने के दिन प्रात:काल जगते ही यदि चन्द्र स्वर हो तो पूरे छह माह अच्छे गुजरते हैं। इसी प्रकार उत्तरायण शुरू होने के दिन प्रात: जगते ही सूर्य स्वर हो तो पूरे छह माह बढ़िया गुजरते हैं। कहा गया है- कर्के चन्द्रा, मकरे भानु।

आप घर में हो या आफिस में, कोई आपसे मिलने आए और आप चाहते हैं कि वह ज्यादा समय आपके पास नहीं बैठा रहे। ऐसे में जब भी सामने वाला व्यक्ति आपके कक्ष में प्रवेश करे उसी समय आप अपनी पुरी साँस को बाहर निकाल फेंकियें, इसके बाद वह व्यक्ति जब आपके करीब आकर हाथ मिलाये, तब हाथ मिलाते समय भी यही क्रिया गोपनीय रूप से दोहरा दें। आप देखेंगे कि वह व्यक्ति आपके पास ज्यादा बैठ नहीं पाएगा, कोई न कोई ऐसा कारण उपस्थित हो जाएगा कि उसे लौटना ही पड़ेगा। इसके विपरीत आप किसी को अपने पास ज्यादा देर बिठाना चाहें तो कक्ष प्रवेश तथा हाथ मिलाने की क्रियाओं के वक्त सांस को अन्दर खींच लें। आपकी इच्छा होगी तभी वह व्यक्ति लौट पाएगा।

कई बार ऐसे अवसर आते हैं, जब कार्य अत्यंत आवश्यक होता है, लेकिन स्वर विपरीत चल रहा होता है ऐसे समय में स्वर की प्रतीक्षा करने पर उत्तम अवसर हाथों से निकल सकता है, अत: स्वर परिवर्तन के द्वारा अपने अभीष्ट की सिद्धि के लिए प्रस्थान करना चाहिए या कार्य प्रारंभ करना चाहिए। स्वर विज्ञान का सम्यक ज्ञान आपको सदैव अनुकुल परिणाम प्रदान करवा सकता है।

卐 कब करें कौन सा काम

ग्रहों को देखे बिना स्वर विज्ञान के ज्ञान से अनेक समस्याओं, बाधाओं एवं शुभ परिणामों का बोध इन नाड़ियों से होने लगता है, जिससे अशुभ का निराकरण भी आसानी से किया जा सकता है। चंद्रमा एवं सूर्य की रश्मियों का प्रभाव स्वरों पर पड़ता है। चंद्रमा का गुण शीतल एवं सूर्य का उष्ण है।

शीतलता से स्थिरता, गंभीरता, विवेक आदि गुण उत्पन्न होते हैं और उष्णता से तेज, शौर्य, चंचलता, उत्साह, क्रियाशीलता, बल आदि गुण पैदा होते हैं। किसी भी काम का अंतिम परिणाम उसके आरंभ पर निर्भर करता है। शरीर व मन की स्थिति, चंद्र व सूर्य या अन्य ग्रहों एवं नाड़ियों को भलीभांति पहचान कर यदि काम शुरु करें तो परिणाम अनुकूल निकलते हैं।

स्वर वैज्ञानिकों ने निष्कर्ष निकाला है कि विवेकपूर्ण और स्थायी कार्य चंद्र स्वर में किए जाने चाहिए, जैसे विवाह, दान, मंदिर, जलाशय निर्माण, नया वस्त्र धारण करना, घर बनाना, आभूषण खरीदना, शांति अनुष्ठान कर्म, व्यापार, बीज बोना, दूर प्रदेशों की यात्रा, विद्यारंभ, दीक्षा, मंत्र, योग क्रिया आदि ऐसे कार्य हैं कि जिनमें अधिक गंभीरता और बुद्धिपूर्वक कार्य करने की आवश्यकता होती है। इसीलिए चंद्र स्वर के चलते इन कार्यों का आरंभ शुभ परिणामदायक होता है। उत्तेजना, आवेश और जोश के साथ करने पर जो कार्य ठीक होते हैं, उनमें सूर्य स्वर उत्तम कहा जाता है। दाहिने नथुने से श्वास ठीक आ रही हो अर्थात सूर्य स्वर चल रहा हो तो परिणाम अनुकूल मिलने वाला होता है।

卐 दबाए मानसिक विकार

कुछ समय के लिए दोनों नाड़ियां चलती हैं अत: प्राय:

शरीर संधि अवस्था में होता है। इस समय पारलौकिक भावनाएं जागृत होती हैं। संसार की ओर से विरक्ति, उदासीनता और अरुचि होने लगती है। इस समय में परमार्थ चिंतन, ईश्वर आराधना आदि की जाए तो सफलता प्राप्त हो सकती है। यह काल सुषुम्ना नाड़ी का होता है, इसमें मानसिक विकार दब जाते हैं और आत्मिक भाव का उदय होता है।

卐 अन्य उपाय

यदि किसी क्रोधी पुरुष के पास जाना है तो जो स्वर नहीं चल रहा है, उस पैर को आगे बढ़ाकर प्रस्थान करना चाहिए तथा अचलित स्वर की ओर उस पुरुष या महिला को लेकर बातचीत करनी चाहिए। ऐसा करने से क्रोधी व्यक्ति के क्रोध को आपका अविचलित स्वर का अशांत भाग शांत बना देगा और मनोरथ की सिद्धि होगी। गुरु, मित्र, अधिकारी, राजा, मंत्री आदि से वाम स्वर से ही वार्ता करनी चाहिए। कई बार ऐसे अवसर भी आते हैं, जब कार्य अत्यंत आवश्यक होता है लेकिन स्वर विपरीत चल रहा होता है। ऐसे समय स्वर बदलने के प्रयास करने चाहिए।

स्वर को परिवर्तित कर अपने अनुकूल करने के लिए कुछ उपाय कर लेने चाहिए। जिस नथुने से श्वास नहीं आ रही हो, उससे दूसरे नथुने को दबाकर पहले नथुने से श्वास निकालें। इस तरह कुछ ही देर में स्वर परिवर्तित हो जाएगा।

बीकानेर में कार्तिक पूर्णिमा पर सवारी का आयोजन

बीकानेर, 12 नवम्बर। श्वेताम्बर जैन खरतरगच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी प्रवर्तिनी साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि के सान्निध्य में कार्तिक पूर्णिमा पर मंगलवार को बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने बीकानेर के प्रमुख मंदिरों में चैत्य परिपाटी के तहत देववंदन, पूजन और नवंकार महामंत्र का जाप करते हुए परिक्रमा की।

गाजे बाजे से निकली भगवान महावीर सहित २४ तीर्थंकरों की सवारी

बीकानेर 11 नवम्बर। भुजिया बाजार के चिंतामणि आदिनाथ जैन मंदिर से भगवान महावीर सहित 24 तीर्थंकरों की सवारी निकाली गई। गाजे बाजे से रथ पर निकली सवारी में भगवान शांतिनाथ मूलनायक थे वहीं उनके परिकर में 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएं थीं। प्रतिमा को जैन शास्त्रोंक्त विधि से गुलाब के पुष्पों, चंदन आदि से पूजन कर धूप दीप से वंदना कर प्रतिष्ठित किया गया। खरतरगच्छ युवा परिषद के मंत्री मनीष नाहटा व सह सचिव अनिल सुराणा, श्री चिंतामणि जैन मंदिर प्रन्यास के अध्यक्ष निर्मलजी धारीवाल, मंत्री चन्द्रसिंह पारख आदि श्रावकों ने पूजन के बाद सवारी ने प्रस्थान किया।

सवारी के मार्ग पर भगवान की प्रतिमा के आगे जगह-जगह चावलों की गंवली की गई तथा श्रावक-श्राविकाओं ने वंदना की। साध्वीश्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि साध्वीवृंद ने भी सवारी में परमात्मा के दर्शन किए तथा कोचर मंडल, आदिश्वर मंडल, जैन मंडल, वीर मंडल, महावीर मंडल आदि भजन मंडलियों की ओर से जगह-जगह गाए गए भक्ति गीतों को सुना तथा भजन मंडलियों के सदस्यों को आशीर्वाद दिया।

सवारी में भगवन महावीर के जीवन आदशों के चित्र, चांदी का सिंहासन, चांदी का कल्पवृक्ष शामिल था। जगह-जगह बैनर व स्वागत द्वार बनाए गए तथा सवारी में शामिल श्रावकों का अल्पाहार आदि से स्वागत किया गया। सवारी में मुस्लिम समाज के कलाकार भजनों में साज बजा कर व कई श्रमिक भगवान की प्रतिमा रखे ठेले को खींचकर बीकानेर के साम्प्रदायिक सौहार्द की परम्परा को पुष्ट कर रहे थे।

-राजीव खजांची, अध्यक्ष खरतरगच्छ युवा परिषद, बीकानेर

धुलिया श्री संघ में एकता हुई

धुलिया 4 नवंबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से धुलिया श्री संघ के राजस्थानी समाज में चल रहा 5 वर्षों का मनमुटाव समाप्त हो गया।

इस मनमुटाव के चलते श्री संघ के कई कार्य अटके हुए थे। पूज्य आचार्यश्री ने चातुर्मास प्रवेश के साथ ही संघ एकता हेतु प्रयास किये थे।

राजस्थानी समाज के दोनों पक्षों के साथ पूज्य आचार्यश्री ने विशद वार्तालाप किया। परिणाम स्वरूप ता. 4 नवम्बर 2019 को एकता की घोषणा की गई।

पूज्य आचार्यश्री ने अपने हस्ताक्षरों से लिखकर समझौता पत्र श्री शीतलनाथ भगवान संस्थान को अर्पित किया। दोनों पक्षों ने परस्पर मिच्छामि दुक्कडं दिया... परस्पर गले मिले।

पूज्य आचार्यश्री ने ता. 5 नवम्बर को प्रवचन में ज्योंहि एकता की घोषणा की, सकल श्री संघ में परम आनंद की लहर छा गई। पूज्यश्री ने कहा- श्री संघ में मतभेद हो सकते हैं। लेकिन मनभेद कभी भी नहीं होना चाहिये। संघ की एकता ही संघ की सबसे बडी ताकत है। संघ की एकता सदा बनी रहे, यही दादा गुरुदेव से प्रार्थना है।

धुलिया नगर में पंचान्हिका महोत्सव संपन्न

धुलिया 1 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में श्रीमती चंपाबाई चिमनलालजी साकरिया परिवार का जीवित महोत्सव निमित्त पंचाह्निका प्रभु भक्ति उत्सव का आयोजन धूलिया नगर में ता. 1 नवम्बर 2019 से 5 नवम्बर 2019 तक किया गया।

पांचों ही दिन प्रवचन, पूजा, पूजन, प्रभु भक्ति का भव्य आयोजन किया गया। ता. 3 नवम्बर को जीवराशि क्षमापना का अनूठा कार्यक्रम संपन्न हुआ। लगातार चार घंटे तक चले इस कार्यक्रम में उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं की आँखों से अश्रुधारा बह चली। पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. ने अपनी विशिष्ट शैली में यह क्षमापना करवाई। संपूर्ण लाभ श्री माणकलालजी चिमनाजी साकरिया परिवार ने लिया।

धुलिया में श्री महावीर स्वामी मंदिर में नाकोडा भैरव की प्रतिष्ठा संपन्न

धुलिया 7 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में जूना धुलिया के प्राचीन श्री महावीर स्वामी जिनमंदिर में नाकोडा भैरव की प्रतिष्ठा ता. 7 नवम्बर 2019 को संपन्न हुई।

नाकोडा भैरव की प्रतिमा भराना, प्रतिष्ठा कराना, पूजा, पूजन एवं स्वामिवात्सल्य आदि का संपूर्ण लाभ श्री महेन्द्रजी नेमीचंदजी परमार परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के पश्चात् प्रवचन एवं स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया।

धुलिया श्री संघ मंदिर में प्रतिष्ठा संपन्न

धुलिया 11 नवंबर। धुलिया श्री संघ के प्रमुख मंदिर श्री शीतलनाथ प्रभु के मंदिर में पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से अनंत लब्धिनिधान प्रथम गणधर श्री गौतमस्वामी एवं पंचम गणधर श्री सुधर्मास्वामी की भव्य प्रतिमा की प्रतिष्ठा संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा हेतु ता. 10 नवम्बर 2019 को कुंभ स्थापना, दीप स्थापना, नवग्रह पूजन, दश दिक्पाल पूजन, अष्ट मंगल पूजन, अठारह अभिषेक, श्री गौतमस्वामी पूजा आदि विविध पूजाऐं पढाई गई।

ता. 11 नवम्बर 2019 को शुभ मंगल मुहूर्त्त में मंत्रोच्चारण व भक्ति भावना उल्लास के साथ श्री गौतमस्वामी एवं श्री सुधर्मा स्वामी की प्रतिष्ठा संपन्न की गई।

श्री गौतमस्वामी की अनुपम प्रतिमा भराने का लाभ श्री शांतिलालजी धनराजजी गुंदेशा परिवार ने एवं बिराजमान व गर्भगृह प्रवेश का लाभ गोल-उम्मेदाबाद निवासी श्री राजेन्द्रकुमारजी भंसाली परिवार ने तथा श्री सुधर्मा स्वामी की भव्य प्रतिमा भराने का लाभ श्री मांगीलालजी शेषमलजी बैद मुथा परिवार ने तथा बिराजमान व गर्भगृह प्रवेश का लाभ श्री प्रदीपभाई अमृतलाल शाह ने लिया।

दोनों गादी भरने, कच्छप व स्वस्तिक बिराजमान का लाभ श्री रसिकलालजी प्रतापचंदजी चौवटिया परिवार मंडार वालों ने लिया। शांतिस्नात्र महापूजन का लाभ श्री संतोषकुमारजी शांतिलालजी पारख परिवार ने तथा प्रतिष्ठा के दिन श्री संघ के स्वामिवात्सल्य तथा सामूहिक आयंबिल कराने का लाभ श्री रसिकलालजी प्रतापचंदजी चौवटिया परिवार मंडार वालों ने लिया। द्वारोद्घाटन का लाभ गोल उम्मेदाबाद निवासी श्री सुनीलजी भंसाली परिवार ने लिया।

धुलिया का ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न कर विहार दो दिन हुआ विदाई समारोह का आयोजन

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य विपुल साहित्य सर्जक मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा 8 तथा पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री चंपाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री चारुलताश्रीजी म., पू. साध्वी श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. ठाणा 5 एवं पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूजनीया साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री आगमरुचिश्रीजी म. ठाणा 2 आदि साधु साध्वी मंडल का चातुर्मास धुलिया नगर में अत्यन्त आनंद उल्लास व ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुआ।

पूज्य गुरु भगवंतों के चातुर्मास की पूर्णाहुति के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कृतज्ञता समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री एवं पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने धुलिया श्रीसंघ की अनुमोदना की। पू.

साध्वी श्री चारुलताश्रीजी म. ने भी उद्‌बोधन दिया।

इस अवसर पर संघ अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी नाहर, महामंत्री श्री सुनीलजी भंसाली, विधान कांकरिया, श्रुति कांकरिया, जागृति कांकरिया, श्रीमती सोनाली कांकरिया, हितेश कांकरिया, सपना परमार, मंदाजी मुणोत, मोक्षा खिंवसरा, जगद्‌गुरु लब्धि मंडल, प्रेम यशो मंडल, रीटा खिंवसरा, भावना नाहर, मोक्षा नाहर, अभिषेक नाहर, सौ. रीना स्वप्निल नाहर, भाग्येश बोहरा, मनन नाहर, डॉ. पुष्पाजी अग्रवाल, जितेन्द्र टाटिया, चेतन रामसीणा, दिनेश बैद मुथा, वीनुभाई शाह, अक्षिता लोढा, ऐश्वर्या कोचर, रिद्धम् कोटेचा, आशा पारख, हर्षल ललवानी, संदेश कोठारी, सम्यक् लूंकड, अशोकजी कोचर, परम खिंवसरा, प्रियल साकरिया, शीतल सेजल रूणवाल, कैलाश बेन शहा, कमलेश गांधी, प्रवीण कोठारी, पूजा भंसाली आदि ने अपने भावों को उद्‌बोधन व गीतों के माध्यम से व्यक्त किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रथम दिन श्री वीनुभाई शाह एवं प्रेमचंदजी नाहर ने किया। तथा दूसरे दिन का संचालन पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने किया।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन शत्रुंजय पट्ट के समक्ष विधि करने के उपरांत पूज्यश्री आदि मुनि मंडल ने दोंडाइचा की ओर, पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ने बलसाणा तीर्थ की ओर तथा पू. आज्ञांजनाश्रीजी म. ने पूना की ओर विहार किया।

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ठाणा 2 ने अक्कलकुआ से सूरत की ओर विहार किया। वे ता. 29 नवम्बर को कुशल दर्शन दादावाडी पधारेंगे। ता. 30 नवम्बर को शंखेश्वरा हाईट्स पाल में प्रवेश होगा। जहाँ उनकी निश्रा में ता. 1 दिसम्बर को कुशल कान्ति खरतरगच्छ श्री संघ के भवन का शिलान्यास समारोह होगा। ता. 2 दिसम्बर से अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारंभ होगा। ता. 6 दिसम्बर को प्रतिष्ठा होगी।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री 14 दिसम्बर को अहमदाबाद पहुँचेंगे, वहाँ से ता. 16 दिसम्बर को शंखेश्वर तीर्थ के लिये छह री पालित पद यात्रा संघ का आयोजन होगा।

शंखेश्वर से विहार कर पूज्यश्री गिरनार तीर्थ पधारेंगे, जहाँ ता. 1 जनवरी 2020 को नवाणुं यात्रा माला विधान होगा। वहाँ से विहार कर पुनः शंखेश्वर पधारेंगे, जहाँ से ता. 8 जनवरी को पाटण के लिये संघ का आयोजन केयुप द्वारा होगा।

वहाँ से विहार कर पूज्यश्री ने सेवाडा पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 20 जनवरी 2020 को श्री सीमंधर स्वामी जिनमंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री सांचोर पधारेंगे, जहाँ ता. 22 जनवरी को दादावाडी में प्रतिष्ठा होगी। वहाँ से विहार कर पूज्यश्री कारोला पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में ता. 26 जनवरी 2020 को अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

संपर्क सूत्र

पूज्य गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

द्वारा- श्री बाबुलालजी लूणिया

श्री महावीर ट्रेडिंग कं.,

5. श्रेयस एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामने, जनरल हॉस्पीटल रोड,

बापुनगर, अहमदाबाद-380021 (गुजरात) मुकेश प्रजापत- 7987151421

शहादा की धन्यधरा पर आराधना भवन का उद्घाटन

शहादा 15 नवंबर। श्री सुघोषाघंट मंदिर एवं दादावाडी शहादा जिस विशाल वास्तु से चर्चित है उस नगरी में पूज्य अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. की पावन निश्रा में श्री जिनमणिप्रभसूरि आराधना भवन का भव्य उद्घाटन समारंभ संपन्न हुआ।

पूज्य गुरुदेव धुलिया चातुर्मास के पश्चात संस्थान की विनंती स्वीकार कर ता. 15 नवम्बर 2019 को शहादा पधारे। शहादा वासियों का उत्साह देखते ही बन रहा था। नाचते गाते झूमते झूमाते शहादा श्री संघ ने गुरुदेवश्री का प्रवेश श्री सुघोषाघंट मंदिर दादावाडी में हुआ। दादावाड़ी से श्री विमलनाथ मंदिर की ओर प्रवेश हुआ। वरघोडे में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ शहादा, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद शाखा शहादा तथा अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद के सभी सदस्यों ने खूब आनंद उठाया।

विमलनाथ जिनालय में पदार्पण होते ही नवकार मंत्र, स्वागत गीत की प्रस्तुति के साथ-साथ नंदुरबार निवासी हितेश भाई संगीतकार ने सभी को खुब झूमाया।

विमलनाथ जिनालय में नूतन बने आराधना भवन का नाम पूज्य आचार्य श्री के नाम पर ही श्री जिनमणिप्रभसूरि आराधना भवन रखा गया। इस नाम की घोषणा पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. सा. की प्रेरणा से बने इस आराधना भवन के नाम का निर्णय सन् 2011 में विमलनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा के अवसर पर उपाश्रय की घोषणा करते समय हुआ था। उसी निर्णय के अनुसार इस आराधना भवन का नामकरण किया गया।

आराधना भवन में लाभ लेने वाले सभी का बहुमान कार्यक्रम संपन्न हुआ। अपने भावों की अभिव्यक्ति संघ के सदस्यों ने की।

तत्पश्चात गत चातुर्मास 2018 में पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद तथा महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म.सा. की प्रशिष्या पू. साध्वी हर्षपूर्णाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से गठित हुई अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद की शपथ विधि संपन्न हुई। पू गुरुदेवश्री ने अपने प्रवचन में आराधना भवन तथा आराधना की महत्ता श्रीसंघ को अत्यंत सरल उदाहरणों से समझाई।

प्रवचन पश्चात् आराधना भवन का उद्घाटन भूमिदाता परिवार श्रीमान सा जयचंदजी कंवरलालजी नाहटा परिवार द्वारा करवाया गया। इस विशाल आराधना भवन के उद्घाटन के उपलक्ष्य में स्वामिवात्सल्य रखा गया।

प्रेरणादायक सूत्र

卐 मोबाइल पर घंटों चिपके रहने वालों से बचने का प्रयास कीजिये, खुद को यह समझाने का प्रयास कीजिये कि अभी यह सब आपके और आपके भविष्य के लिए सही नहीं है।

अक्कलकुवा नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

अक्कलकुवा 23 नवंबर। श्री आदिनाथ जिनमंदिर व श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी के प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ श्री वासुपूज्यस्वामी जिनमंदिर में प्रतिमा प्रतिष्ठा एवं श्रीमती पंखाबाई जसराजजी चोपडा आराधना भवन का उद्घाटन संपन्न हुआ।

पूज्य गुरुदेव अवन्ति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किया गया। इस महोत्सव में पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म., मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म., मुनि श्री मलयप्रभसागरजी म., मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. एवं धवलयशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा., साध्वी श्री विश्वरत्नाश्रीजी म., साध्वी श्री रश्मिरेखाश्रीजी म., साध्वी श्री चारुलताश्रीजी म., साध्वी श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म. की सानिध्यता प्राप्त हुई।

ता. 18 नवंबर को सुबह 8:30 बजे पू. गुरुदेव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा आदि ठाणा 8 का भव्य बाजते गाजते अक्कलकुवा नगर में प्रवेश हुआ। तलोदा नाका से जैन मंदिर प्रांगण तक शोभायात्रा निकाली गयी। शोभायात्रा में सभी नूतन प्रतिमाजी का भी नगर प्रवेश कराया गया। पश्चात जैन मंदिर परिसर में प्रवचन रखा गया। आचार्य भगवंत के स्वागत के लिए श्री वासुपूज्य पवित्र महिला मंडल, सुधर्मा महिला मंडल व समता महिला मंडल की ओर से स्वागत गीत, केयुप अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक शुभम भंसाली, सौ. शोभा भंसाली आदि ने मनोगत भाव व्यक्त किये। गुरुदेव के प्रवचन के साथ गुरुदेव के मंगल प्रवेश से पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से निर्मित श्रीमती पंखाबाई जसराजजी चोपडा आराधना भवन का उद्घाटन किया गया। वहां भी प्रवचन हुआ।

ता. 19 नवंबर को जिनमंदिर एवं दादावाडी प्राणप्रतिष्ठा का विधि-विधान, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी, कुशल धाम में गुरुदेवश्री की निश्रा में अयोध्या नगर व कुशल नगर के लाभार्थी परिवार द्वारा उद्घाटन कर के प्रतिष्ठा महोत्सव का आगाज हुआ। प्रभु आदिनाथजी का पंचकल्याणक मंचन किया गया, जिसमें भगवान के माता पिता बनने का लाभ श्रीमान राजेंद्रजी सौ. उषाबाई डागा को प्राप्त हुआ। इंद्र इंद्राणी- कुशल संकलेचा सौ. अक्षिता संकलेचा बने। रोज रात्रि में प्रभु भक्ति का आयोजन किया गया जिसमें देश के प्रसिद्ध संगीतकार मुंबई से अनिल सालेचा, महेंद्र जैन, राजस्थान से महावीर देसाई (बालोतरा) प्रिंस जैन (फलोदी), सूरत से महावीर जैन, पूनम चोपडा, आदि द्वारा भक्ति का आयोजन हुआ।

ता. 22 नवंबर को भगवान आदिनाथ के दीक्षा कल्याणक के उपलक्ष में दीक्षा का स्वर्ण अक्षरों में लिखने जैसा वरघोडा निकाला गया। जिसमें हाथी, घोड़े, ऊंट, रथ पालकी, तुतारी पथक, अनेक ढोल पथक, नाशिक ढोल, आदिवासी झांकियां, चोपडा बेंड, शिरपुर बैंड आदि अनेक पथक इस वरघोडे में उपस्थित थे। सभी चौकों में रंगोली

सजाई गई। अक्कलकुवा, खापर, वान्याविहार, तळोदा, नंदुरबार, सेलम्बा, शहादा, खेतिया, धुलिया, दोंडाइचा से सभी जैन समाज व अनेक महिला मंडल अपनी वेशभूषा परिधान करके इस वरघोडे में सम्मिलित हुए।

ता. 23 को शुभ मुहूर्त में अक्कलकुवा नगर में श्री वासुपूज्यस्वामी जिनमंदिर में उत्थापित प्रतिमाओं दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि, माणिभद्र देव, कुमार यक्ष, चण्डा देवी की प्रतिमाओं के साथ शांतिगुरुदेव, पद्मावती माता एवं 3 मंगल मूर्ति की स्थापना गुरुदेव की निश्रा में लाभार्थी परिवारों द्वारा की गई। इसके बाद श्री आदिनाथ भगवान व जिनकुशलसूरि दादावाडी में शुभ मुहूर्त में श्री आदिनाथ भगवान, श्री महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरि, जिनकुशलसूरि, श्री शांति गुरुदेव, आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा, श्री नाकोडा भेरुजी, श्री पद्मावती माता की प्रतिमा लाभार्थी परिवारों द्वारा प्रतिष्ठित की गयी। मुख्य अमर ध्वजा श्रीमती धाईबाई राणुलालजी डागा परिवार द्वारा चढ़ाई गयी।

यह ज्ञातव्य है कि इस दादावाडी के लिये अक्कलकुवा निवासी स्व. पिताजी श्री राणुलालजी डागा की स्मृति में मातु श्री धाई बाई पुत्र प्रेमचंदजी सौ. पद्माबाई परिवार पौत्र अजय सौ. पूनम, राहुल सौ. सोनम पौत्री सौ. सुनंदा ललितजी कोटेचा, रेखा विकासजी प्रपौत्री नव्या निश्रा भुवि प्रपौत्र प्रियांश रिधम डागा परिवार के लिये विशाल भूखण्ड अर्पण किया।

इस जिनमंदिर व दादावाडी के निर्माण कार्य अहमदाबाद के श्री देवेन्द्रभाई व हार्दिकभाई सोमपुरा ने सिर्फ 2 माह में पूर्ण किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सूत्रसंचालन एड. गजेंद्र भंसाली (हायकोर्ट औरंगाबाद) ने किया एवं शुभम भंसाली ने साथ दिया।

इस प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन श्री मूर्तिपूजक जैन संघ व श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी चेरिटेबल ट्रस्ट अक्कलकुवा की ओर से किया गया। संपूर्ण कार्यक्रम में श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद अक्कलकुवा शाखा, अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद, श्री वासुपूज्य पवित्र महिला मंडल, शांति युवा मंडल, नवयुवक सुधर्मा मंडल, सुधर्मा महिला मंडल, समता युवा संघ, समता महिला मंडल आदि सकल जैन श्रीसंघ का सहयोग रहा।

– शुभम् भंसाली

खेतासर में निर्माणाधीन दादावाडी का अवलोकन

खेतासर 24 नवंबर। जोधपुर से 58 कि.मी और ओसियां जी से 10 कि.मी. दूर चतुर्थ दादा गुरुदेव श्री जिनचन्द्रसूरि जी की जन्मभूमि खेतासर में जिनमंदिर व दादावाड़ी की प्रतिष्ठा 16 फरवरी 2020 को पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में होने जा रही है।

प्रतिष्ठा समारोह चार दिवसीय 14 से 17 फरवरी 2020 की व्यवस्थाओं के लिए दि. 24 नवम्बर 2019 रविवार को सुबह 9 बजे से शाम 5.30 बजे तक ओसियां में मीटिंग एवं खेतासर विजिट रखी गई, जिसमें श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी व श्री ओसियां जैन तीर्थ के ट्रस्टी और पदाधिकारियों, अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों, खेतासर नव निर्माण समिति एवं खेतासर नगर के वरिष्ठ श्रावक, खरतरगच्छ युवा परिषद् (केयुप) जोधपुर, फलोदी, बिकानेर शाखाओं के पदाधिकारियों के उपस्थिति में प्रतिष्ठा सम्बंधित सभी कार्यों पर चर्चा की तथा उन्हें पूर्ण करने हेतु समितियों का गठन किया गया।

आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब की पुण्यतिथि मनाई

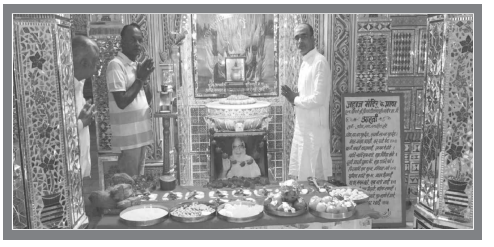

卐 मांडवला 19 नवंबर। 34वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष में समाधि मंदिर के रूप में विश्व विख्यात जहाज मंदिर के निर्मित कमलाकार गुरु पादुका के समक्ष जिनकांतिसागरसूरि गुरुपद पूजा संगीत के साथ पढाई गई। अनेक लोगों के साथ कोषाध्यक्ष श्री प्रकाशजी छाजेड एवं श्री गौतमजी संकलेचा पादरु-चेन्नई ने भाग लिया।

卐 जूनागढ 19 नवंबर। पूज्य युगप्रभावक आचार्य श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब की पुण्यतिथि के उपलक्ष में गिरनार तीर्थ में कैंप लगाया गया जिसमें 400 लोगों को कान की मशीन वितरित की गई। यह आयोजन पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. एवं पूजनीया तपोरत्ना साध्वी सुलक्षणाश्रीजी म. आदि ठाणा 17 की पावन निश्रा में हुआ।

अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति अहमदाबाद व सांप्रत एजुकेशन चेरीटेबल ट्रस्ट जूनागढ़ के संयुक्त तत्त्वावधान में हुए समारोह में गच्छगणिनी श्री द्वारा मंगलाचरण के उपरांत साध्वी प्रियकल्पनाश्रीजी म. व साध्वी प्रियशुभांजनाश्रीजी म. द्वारा प्रासंगिक उद्‌बोधन दिया गया। इस अवसर पर कच्छी भवन के मुख्य ट्रस्टी श्री चुन्नीभाई शाह, ललितजी कास्टिया, प्रणव भाई, महेन्द्र भाई आदि ने समारोह को सफल बनाया।

卐 नीमच 19 नवंबर। पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य देव श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब की आज्ञानुवर्त्तिनी प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्या राजेंद्रश्रीजी म.सा. एवं वाणीसिद्ध ज्योतिर्विद विजेंद्रश्रीजी म. सा. की चरणश्रिता मालवा मेवाड़ ज्योति साध्वी गुणरंजनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में पूज्य युगप्रभावक क्रांतिकारी गुरुदेव श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में दिनांक 19-11-2019 को प्रातः 9:00 बजे दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा की गई। तत्पश्चात गुरु प्रसादी का आयोजन किया जिसमें अनेक गुरुभक्तों ने भाग लिया। श्री शंखेश्वर पार्श्व पद्मावती धाम ट्रस्ट एवं चातुर्मास कमेटी शक्ति नगर नीमच में यह आयोजन हुआ।

प्रेरणादायक सूत्र

卐 समय व्यर्थ बिलकुल भी न गंवाएं। किसी भी काम को करने से पहले एक बार जरूर सोचें कि क्या वह आपके लिए किसी भी तरह से फायदेमंद है?आपको खुद तय करना होगा कि इस समय आपके लिए क्या महत्वपूर्ण है और आपको किसे टाइम देना चाहिए !

चैन्नई में संभवनाथ जिनालय की 14 वीं ध्वजारोहण

चैन्नई 00 नवंबर। वडपलनी स्थित श्री संभवनाथ जिनालय के प्रांगण में श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, वडपलनी के तत्त्वावधान में पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्यायें पू. साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा. शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में परमात्मा संभवनाथ जिनालय की 14वीं वर्षगांठ मनाई गई। उसके निमित्त दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस में 18 अभिषेक परमात्मा का करवाया गया।

द्वितीय दिवस में सतरभेदी पूजन श्री जिन संभव कुशल महिला मंडल के द्वारा बहुत ही ठाठ-बाठ से पढाई गई। और ध्वजा श्री वीरेन्द्रजी महेता परिवार के द्वारा चढाई गई। शाम को दादा जिनकुशलसूरि के जन्मतिथि के उपलक्ष में दादा गुरुदेव इकतीसा का पाठ भी सभी गुरुभक्तों के द्वारा किए गए। अल्पाहार की व्यवस्था रखी गई।

विधि-विधान श्री पिंकेश भाई द्वारा कराया गया। सभी श्रद्धालुओं ने सभी कार्यक्रम में खूब ही उमंग, उल्लास और उत्साह के साथ भाग लिया। पू. साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी म.सा. के द्वारा परमात्मा की ध्वजा क्यों व किसलिए चढाई जाती है? उसका व दादा गुरुदेव के जीवन चरित्र का विस्तृत वर्णन किया गया। उसे वैज्ञानिक और आध्यात्मिक तरीके से ध्वजा का महत्व बताया गया।

बेरला में चातुर्मास का ठाट

बेरला नगर में प्रथम बार वर्षावास का अवसर प्राप्त हुआ। महत्तरा पद विभूषिता पूज्या मनोहरश्रीजी म.सा. की सुशिष्या मंडल प्रमुखा पूज्या साध्वी मनोरंजनाश्रीजी म., सरलमना पू. वसुंधराश्रीजी म., पू. धर्मोदयाश्रीजी म. एवं पू. पुण्यधराश्रीजी म. के चातुर्मास में अनेक प्रभावक तप-त्याग के साथ धर्माराधना हुई।

पू. धर्मोदयाश्रीजी म. द्वारा वर्धमान तप की २९ ओली की आराधना, श्रीमती कविता बोथरा द्वारा मासक्षमण की तपस्या के साथ अनेकों ने अठाई, ग्यारह की तपस्या की। १३ दिवसीय भक्तामर संपुट महापूजन, सर्वतोभद्र महापूजन, १७० जिनेश्वरों की आराधना-साधना, सरस्वती पूजन, गौतम स्वामी पूजन, पद्मावती महापूजन व समय-समय पर दादा गुरुदेव की पूजा, स्नात्र पूजा, अन्तरायकर्म निवारण पूजा, पंचकल्याणक पूजा आदि हुए।

पू. गुरुवर्या मनोहरश्रीजी म.सा. की पुण्यतिथि पर पंचान्हिका महोत्सव, नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिजी के जीवन चरित्र पर नाटिका, शालीभद्र की नाटिका, महापुरुषों की जीवंत झांकी, २७ दिवसीय दादा गुरुदेव का इकतीसा जाप, धरणेन्द्र पद्मावती का प्रगटीकरण नाटिका का मंचन किया गया। मनोहर संस्कार शिविर महिलाओं के लिए १० दिवसीय और बच्चों के लिए ५ दिवसीय मनोहर संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। प्रत्येक रविवार को बच्चों के लिए अलग-अलग ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी, गेम आदि कार्यक्रम रखे गए।

हैदराबाद में केएमपी का गठन

हैदराबाद 15 नवंबर। दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी की जन्मतिथि के अवसर पर खरतरगच्छ महिला परिषद हैदराबाद शाखा का विधिवत गठन हुआ।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा एवं पूज्या साध्वी हर्षपूर्णाश्रीजी म. सा. की निश्रा में खरतरगच्छ महिला परिषद की घोषणा की गई। इस अवसर पर खरतरगच्छ जैन श्री संघ फीलखाना के अध्यक्ष श्री हस्तीमलजी बागरेचा, केंद्रीय समिति से अंकितजी, युवा परिषद अहमदाबाद से जगदीशजी बोथरा, युवा परिषद के प्रदेशाध्यक्ष रमेशजी संखलेचा, हैदराबाद शाखा के उपाध्यक्ष अशोकजी छाजेड, कोषाध्यक्ष अशोकजी संखलेचा, मंत्री प्रशांत जैन आदि उपस्थित थे।

युवा परिषद नवगठित महिला परिषद को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए जिनशासन की सेवा और उन्नति में सदैव अग्रणी रहने का संकल्प बताया।

नव निर्वाचित पदाधिकारी- अध्यक्षा- अनिताजी जैन श्रीश्रीमाल, उपाध्यक्षा- शीतलजी तातेड़, मंत्री- श्वेताजी संखलेचा, सहमंत्री- मनीषाजी वडेरा, कोषाध्यक्षा- सुमनजी बाफना, सह कोषाध्यक्षा- सपनाजी छाजेड, कार्यकारिणी सदस्या- पिंकीजी छाजेड़, अंजूजी ढड्ढा, देवीजी छाजेड, अरुणाजी वडेरा, सारिकाजी छाजेड़, मंजुलताजी श्रीश्रीमाल, वीणाजी संखलेचा, कविताजी झाबक, मंजूजी पारेख, प्रेमलताजी बोहरा, संतोषजी हुंडिया।

इसी अवसर पर अहमदाबाद से पधारे जगदीशजी बोथरा और अंकितजी बोह रा ने आगामी छरी पालित संघ में पधारने के लिए साध्वीवर्या, श्रीसंघ, युवा परिषद, महिला परिषद से सविनय अनुरोध किया। -प्रशांत जैन

तेजपुर (आसाम) से विहार

पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू.गणिनीपद विभूषिता गुरुवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा., उग्र तपोरत्ना पू. साध्वी सुलक्षणाश्रीजी म.सा. की शिष्या पू.आसाम प्रभाविका साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. डॉ. साध्वी प्रियलताश्रीजी म., पू. डॉ. साध्वी प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 ने श्री जैन श्वेतांबर संघ तेजपुर के तत्त्वावधान में चातुर्मास पूर्ण कर ढेकियाजुली होतु हुए टंगला की ओर प्रस्थान किया। ता. 2 दिसम्बर को टंगला में प्रवेश होगा।

पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी जी म.सा. द्वारा प्रदत्त मुहूर्त के अनुसार ता. 5 फरवरी से 9 फरवरी तक सम्मेतशिखरजी छरी पालित संघ की घोषणा की गई।

जयपुर में साध्वी सुलोचना श्रीजी महाराज का देवलोकगमन

जयपुर 20 नवंबर। मुलतान में जन्मे श्री धन्नीरामजी व सरस्वती देवी की पुत्री 20 वर्ष की उम्र में पालीताणा में चारित्र ग्रहण कर पूज्या श्री विचक्षणश्रीजी महाराज की सुशिष्या व पूज्या चन्द्रकलाश्रीजी म.सा. की निश्रावर्तिनी पूज्या साध्वीवर्या सुलोचनाश्रीजी म.सा. का देवलोकगमन मोहनबाड़ी परिसर में दोपहर 3.00 बजे हो गया। जयपुर के विभिन्न संघों द्वारा खरतरगच्छ श्री संघ, तपागच्छ श्री संघ, श्रीमाल सभा, मालवीय नगर संघ, प्राकृत भारती व खरतरगच्छ युवा परिषद, श्री मूर्तिपूजक युवक महासंघ आदि संस्थाओं द्वारा भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

मुमुक्षु पायल बागरेचा का अभिनंदन

वैराग्यवती मुमुक्षु सुश्री पायल अशोककुमारजी बागरेचा का स्थान-स्थान पर वरघोडा एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। तीर्थाधिराज सिद्धाचल गिरिराज की यात्रा एवं महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. का आशीर्वाद लेने के पश्चात् गिरनार महातीर्थ की यात्रा एवं गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का आशीर्वाद लिया।

अहमदाबाद के शाहीबाग स्थित ओसवाल भवन में बालोतरा निवासी श्री प्रकाशचंदजी बाफना परिवार द्वारा दि. 25 नवंबर को स्वामीवात्सल्य के आयोजन के साथ सुश्री पायल बागरेचा का अभिनंदन किया गया। दि. 26 नवंबर को रुषिका अपार्टमेंट में बिराजित पूजनीया साध्वीवर्या श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में सुश्री पायल बागरेचा का श्री खरतरगच्छ संघ के रतनलालजी बोहरा हालावाले, बाबुलालजी लूणिया आदि द्वारा अभिनंदन किया गया।

सूरत सिटी में दि. 27 नवंबर बालोतरा निवासी श्री पारसमलजी बागरेचा परिवार द्वारा भव्य वर्षीदान का वरघोडा एवं अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। तथा पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में दि. 29 नवंबर को कुशल दर्शन दादावाडी परवत पाटीया में गुरुदेव के प्रवेश के साथ वरघोडा एवं अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। दि. 30 नवंबर को शंखेश्वर हाइटस पाल में भी गुरुदेव के प्रवेश के साथ वरघोडा एवं अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया।

पिछले चार वर्षों से मुमुक्षु सुश्री पायल अशोककुमारजी बागरेचा पूजनीया साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म.सा. के सानिध्य में संयम की शिक्षा ग्रहण कर रही है। दीक्षार्थी मुमुक्षु ने पंच प्रतिक्रमण के साथ चार प्रकरण, तीन भाष्य, कर्मग्रन्थ, संस्कृत आदि का विशिष्ट अभ्यास किया है।

दीक्षा के उपलक्ष में बालोतरा शहर में दि. 6 फरवरी 2020 को वर्षीदान का वरघोडा निकाला जायेगा। दि. 7 फरवरी 2020 को प्रात:कालीन शुभ मुहूर्त दीक्षा विधि होगी।

केयुप, केएमपी तथा केबीपी का शपथ ग्रहण

सूरत 29 नवंबर। बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत के तत्त्वावधान में पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में नवनिर्वाचित अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् शाखा सूरत-1, अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् शाखा सूरत-1 तथा खरतरगच्छ बालिका परिषद् शाखा सूरत-1 का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ।

उन्होंने शासन, गच्छ के प्रति निष्ठा की शपथ ली।

इस अवसर पर केयुप अध्यक्ष गौतम मालू ने केयुप से जुड़ने के लिये अपने आपको सौभाग्यशाली बताया। उसने कहा कि हम पूज्य गच्छाधिपतिश्री के आदेशानुसार गच्छ के लिये पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे।

जिनहरि विहार में ध्वजारोहण संपन्न

विश्व विख्यात श्री पालीताणा तीर्थ स्थित श्री जिनहरि विहार धर्मशाला के श्री आदिनाथ परमात्मा से सुशोभित मयूर मंदिर का 16वां वार्षिक ध्वजारोहण दि. 10 नवंबर 2019 को आनन्द व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती पुष्पाजी अशोकजी जैन परिवार द्वारा जिनमंदिर पर ध्वजा चढाई गई। प्रातः अठारह अभिषेक का आयोजन किया गया। सतरह भेदी पूजा पढाई गई। यह समारोह पूज्य मुनिवर श्री पू. मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मोक्षप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मननप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म. एवं पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी प्रियदर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी मृगावतीश्रीजी म. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, प्रवीणकुमारजी गोलछा धमतरी, श्रीमती शांतिदेवी छाजेड दुर्ग, धर्मचंदजी बोथरा चैन्नई, चंद्राबाई भंसाली चैन्नई आदि अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 2059 कार्तिक सुदि 13 को पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. (तत्कालीन उपाध्याय) की निश्रा में संपन्न हुई थी।

– भागीरथ शर्मा, प्रबंधक–जिनहरि विहार

श्री रामदेवरा तीर्थ (राज.) में ढड्ढा परिवार द्वारा रत्न जड़ित मुकुट भेंट

श्री रामदेवरा (राज.) में श्री जैन तीर्थ संस्थान द्वारा भव्य मंदिर का निर्माण कराकर श्री पार्श्वनाथ भगवान की भव्य मूर्ति की प्रतिष्ठा की गई। प्रतिष्ठा के बाद इस तीर्थ में कई चमत्कारिक घटनायें हुई।

इस प्रतिमा के दर्शन करने हेतु काफी भक्तजन दर्शनार्थ पहुंचते हैं। इस तीर्थ निर्माण के भूमिदाता आदि अनेक रूपों में विशेष सहयोगी फलोदी निवासी हाल चैन्नई के श्री मोहनचंदजी प्रदीपकुमारजी ढड्ढा परिवार ने भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के लिए चांदी का गोल्ड पॉलिस रत्न जड़ित भव्य मुकुट एवं कुण्डल 27 नवम्बर 2019 को भेंट किया। इस अवसर पर श्री जैन तीर्थ संस्थान, रामदेवरा ट्रस्ट मंडल द्वारा श्री ढड्ढा परिवार का बहुमान किया गया।

कैवल्यधाम में दीक्षा

कैवल्यधाम तीर्थ 21 नवंबर। गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती अध्यात्मयोगी प.अध्यात्म योगी मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म., मुनिश्री मनीषसागरजी म. आदि ठाणा व पू. मरुधरज्योति साध्वी मणिप्रभाश्रीजी म. की निश्रावर्तिनी साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि व पू. साध्वी जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म. की सुशिष्याओं की साक्षी में कैवल्यधाम तीर्थ में गढसिवाणा (राज.) निवासी मुमुक्षु दर्शन संजयकुमारजी बागरेचा (सूरत) के दीक्षा की उद्घोषणा की गई। दीक्षा का शुभ मुहूर्त वि.सं. २०७६ फागण वदी ४ ता. 12 फरवरी 2020 गुरुवार को कैवल्यधाम तीर्थ कुम्हारी (छ.ग.) पर होगी।

भाड़खा में उपाश्रय का भूमिपूजन

भाड़खा 2 दिसंबर। बाडमेर जैसलमेर हाइवे रोड़ पर, बाडमेर से 30 कि.मी. दूर भाड़खा नगर में पूज्य उपाध्याय प्रवर गुरुदेव श्री मनोज्ञसागरजी म. सा. एवं मुनि श्री नयज्ञसागरजी म.सा. की प्रेरणा व निश्रा में उपाश्रय हेतु भूमिपूजन व शिलान्यास विधान किया गया। उपाश्रय हेतु भूमि दाता- श्री किशनलालजी गेनीरामजी चोपड़ा, भाड़खा, उपाश्रय निर्माण लाभ- पूज्य उपाध्याय भगवंत की प्रेरणा से श्री मोहनलाल आसुलालजी मालू परिवार भाड़खा वालों ने लिया है। बहुत जल्दी इस उपाश्रय का निर्माण सम्पन्न होगा।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित

नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय एवं मणिधारी दादाबाड़ी के दर्शनार्थ पधारिए

द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचंद्रसूरिजी की जन्मस्थली विक्रमपुर (बीकमपुर) में नवनिर्मित महावीर स्वामी जिनालय तथा मणिधारी दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा खरतरगच्छाधिपति प.पू. आचार्य श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के वरद हस्त से दिनांक 15 नवम्बर 2017 को हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई है। ऐसे भव्य जिनालय एवं दादाबाड़ी के दर्शनार्थ सपरिवार पधारकर यात्रा का लाभ लेवें।

श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा संचालित दादाबाड़ी में साधु-साध्वीयों के लिये आराधना हॉल बनाया गया है एवं आधुनिक धर्मशाला में 4 कमरें वातानुकूलित बनाये गये हैं तथा डोरमेट्रीमय 20 पलंग की सुविधा उपलब्ध है। सर्व सुविधायुक्त भोजनशाला चालू है।

यहां पधारने के लिये बीकानेर तथा फलोदी से बस सर्विस चालू है। यह स्थान फलोदी से 75 किमी. तथा बीकानेर से 140 किमी. की दूरी पर स्थित है। यह जैसलमेर-फलोदी-बीकानेर हाइवे पर बाप से 45 किमी. पर स्थित है।

Executive Trustee
Shri padamji Tatia
Mob. 9840842148

मुनीमजी : प्रशान्त शर्मा
श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी,
बीकमपुर (विक्रमपुर)- 334305, (जि.बीकानेर-राज.)
मो. 9571353635 पेढ़ी, 9001426345 मुनीमजी

बाडमेर जैन श्री संघ सूरत में पूज्यश्री का पदार्पण

सूरत 29 नवंबर। बाडमेर जैन श्री संघ, सूरत की आग्रहभरी विनंती स्वीकार कर पूज्य गुरुदेव अर्वांति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. अक्कलकुआ की प्रतिष्ठा संपन्न कराकर उमरपाडा, मांडवी होते हुए ता. 29 नवम्बर 2019 को सूरत पर्वत पाटिया स्थित कुशल दर्शन दादावाड़ी पधारे।

श्री संघ द्वारा भव्य स्वागत किया गया। प्रवेश शोभायात्रा के साथ मुमुक्षु सुमित मेहता, मुमुक्षु दर्शन बागरेचा और मुमुक्षु पायल बागरेचा का वरघोडा भी निकाला गया।

अध्यक्ष श्री गौतमचंदजी बोहरा हाला वालों ने पूज्यश्री के प्रति अभिनंदन भाव प्रकट करते हुए कृतज्ञता ज्ञापित की। श्री पुखराजजी संखलेचा, श्री संपतजी धारीवाल, श्री कुशल सज्जन महिला मंडल, श्री सुमतिनाथ बहु मंडल, श्रीमती ज्योति मालू ने गीतिकाऐं प्रस्तुत की।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री ने गच्छ की एकता के लिये अपने आपको समर्पित करने का आह्वान किया। तीनों मुमुक्षुओं का श्री संघ की ओर से बहुमान किया गया।

श्री संघ की ओर से पूज्यश्री को कामली ओढाई गई। समारोह का सफल संचालन पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने किया। संचालन करते हुए मुनिश्री ने गुरु महिमा का वर्णन किया। श्री संघ ने चातुर्मास की विनंती की।

प्रेरणादायक सूत्र

- समय बचाने का सीधा सा रास्ता है कि मल्टीटास्किंग बनें... अक्सर हमारी दिनचर्या के ऐसे बहुत से काम होते है जिनमें हम दो कामों को या इससे अधिक कामों को एक साथ कर सकते हैं... ऐसे कामों को चिन्हित करके हम अपने समय की बचत कर सकते हैं !
- आप रात में अगले दिन के लिए कामों की सूची बना लीजिये... यानि एक लिस्ट उनकी जो काम आपको कल करने हैं और फिर उस लिस्ट को अगले दिन अपने पास रखिये... इससे आपको हर पल अहसास होता रहेगा कि कितना काम आप खतम कर चुके और कितना अभी शेष बचा है !
- हर दिन रात में खुद अपनी टारगेट लिस्ट का मूल्यांकन जरूर करें... जिससे आपको पता चले कि बीते कल की रात अपने खुद को कितना टारगेट दिया था और आप कितने टास्क खतम कर पाए, इससे दूसरे दिन आप काम करने की स्पीड स्वत: बढ़ा देंगे !
- माने या न माने पर आज के समय में सबसे ज्यादा टाइम लेता है सोशल मीडिया। फेसबुक पर घंटों होम पेज स्क्रॉल करना... अगर कोई फोटो या स्टेटस डाला है तो बार-बार लाइक व कमेंट का वेट करना! सही माने तो ऐसी हालत में अगर हम फेसबुक लॉगआउट भी कर देते हैं तो भी मस्तिष्क तुरंत वहां से नहीं हटा पाते... इससे हमारा बहुत सा समय नष्ट हो जाता है !
- एक व्यवस्थित टाइम टेबल जरूर बनायें और सबसे जरूरी कि उसे फॉलो करें! अक्सर लोग बस टाइम टेबल बना लेते हैं और एक या दो दिन से ज्यादा फॉलो नहीं कर पाते!

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर होटल में भोजन कर रहा था। उसने कचोरी मंगाई। उसने कचोरी ली, ऊपर का पड निकाल दिया, भीतर का मसाला खाने लगा।

कुछ देर बाद समोसा मंगवाया। उसके भी ऊपर का पड निकाल दिया और भीतर का मसाला खा गया।

फिर उसने सेंडविच मंगवाया। उसके भी ऊपर का पड निकाला और भीतर का मसाला खाने लगा।

यह देख कर वेटर ने पूछा- भाई साहब! आप ऐसा क्यों कर रहे हो?

जटाशंकर ने जवाब दिया- भैया! मेरी तबियत ठीक नहीं रहती है। डॉक्टर की सलाह ली थी। डॉक्टर ने बाहर का खाने का मना किया है। इसलिये मैं बाहर का निकाल कर अन्दर का खा रहा हूँ।

यह सुनकर वेटर हँसने लगा।

डॉक्टर के कथन का तात्पर्य क्या था और जटाशंकर ने क्या समझा?बाहर का नहीं खाना अर्थात् बाजार का नहीं खाना। पर जटाशंकर ने इसका अलग ही अर्थ निकाल लिया।

हम भी कभी-कभी ऐसा ही कर बैठते हैं। परमात्मा के वचनों का शाब्दिक अर्थ पकड लेते हैं, तात्पर्यार्थ समझ नहीं पाते। हमें केवल शब्द नहीं पकडने हैं, अपितु भावार्थ को स्वीकार कर समझना है।

जैसलमेर में चातुर्मास परिवर्तन

जैसलमेर 12 नवंबर। पू. गुरुदेव गच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा के शिष्य पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी महाराज एवं पूज्य आर्य श्री मेहुलप्रभसागरजी महाराज का चातुर्मास परिवर्तन कार्तिक सुदी १५ मंगलवार दिनांक 12/11/2019 को प्रात: 8:30 बजे जैन भवन से पटवा हवेली के पास स्थित श्री महेंद्रजी भगवानदासजी (कॉमरेड) जिन्दानी के निवास पर सकल श्रीसंघ के साथ हुआ।

निवास स्थान पर हुए प्रवचन में सिद्धाचल गिरिराज की महिमा के साथ भावयात्रा व चातुर्मास कल्प का वर्णन किया गया। प्रवचन के पश्चात् जिंदाणी परिवार की ओर से अल्पाहार का लाभ लिया गया।

पूज्य मुनि भगवंत अभी जैन भवन जैसलमेर में विराजित है। दि. 7 दिसंबर को विहार कर बरमसर पधारेंगे। दि. 8 दिसंबर को लोद्रवा जी पधारेंगे जहाँ दि. 9 दिसंबर को 401 वां ध्वजारोहण संपन्न होगा उसमें निश्रा प्रदान करेंगे।

।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।।

।। श्री नमिनाथाय नमः ।।

।। श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ।।

श्री कारोला नगरे

जीर्णोद्धारित प्राचीन श्री नमिनाथ जिनप्रासाद

एवं

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी के

भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को ससम्मान आमंत्रण

पावन निश्रा

प.पू. गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

प्रतिष्ठा शुभ दिवस

वि. सं. 2076 माघ सुदि 2, रविवार

ता. 26 जनवरी 2020

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, कारोला

वाया-सांचोर जिला-जालोर राज.

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।। ।। श्री सीमंधर स्वामिने नमः ।। ।। श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। पू. गणनायक श्री सुखसागर सद्गुरुभ्यो नमः ।।

श्री सिवाडा नगरे

स्वद्रव्य से निर्मित श्री सीमंधर स्वामी जिनालय के भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को स्नेहपूरित आमंत्रण

पावन निश्रा

पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

भव्य वरघोड़ा
19 जनवरी 2020

प्रतिष्ठा शुभ दिवस
वि. सं. 2076 माघ वदि 11
सोमवार, 20 जनवरी 2020

निवेदक श्रीमती जमनादेवी जेठमलजी वनाजी दरगाजी गांधी परिवार चितलवाना (सिवाड़ा)

महोत्सव स्थल

श्री सीमंधरस्वामी जिनालय
सिवाडा फांटा, अहमदाबाद हाइवे,
पो. सिवाडा, जिला-जालोर (राज.)

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, शिवगंज रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408